राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

(ग्रामीण विकास मंत्रालय)

(भारत सरकार)

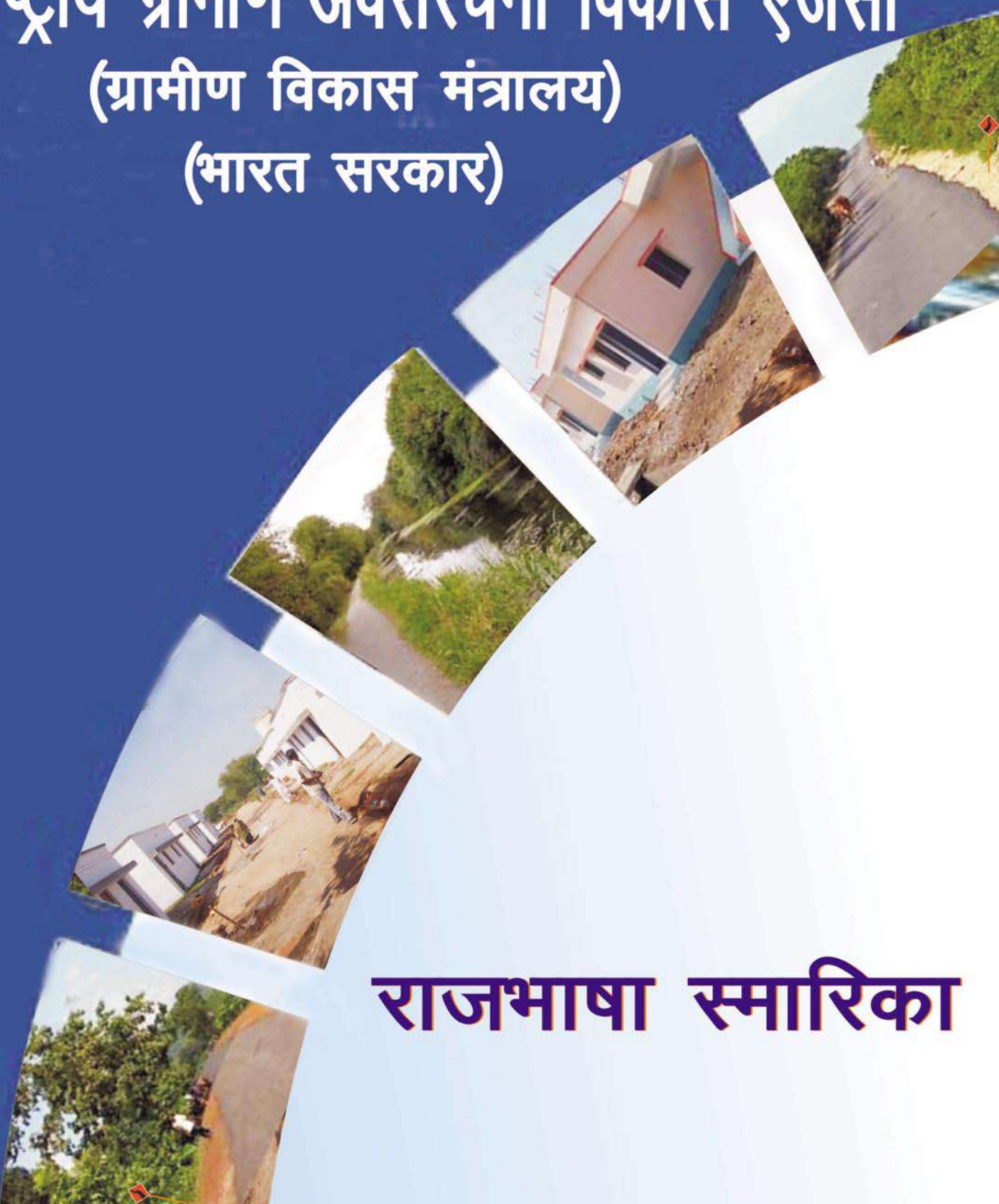

राजभाषा स्मारिका

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "हिंदी स्मारिका" का सप्तम संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है । यह पत्रिका न केवल कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों में हिंदी के प्रति रुचि एवं सम्मान की द्योतक है अपितु राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में कार्यालय के बढ़ते कदमों की भी परिचायक है ।

हिंदी ने हमेशा से हमारे देश की एकता और अखन्डता बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इसका प्रयोग हमारे देश के प्रति सम्मान व गौरव का एक सशक्त प्रतीक है।

आशा है कि "हिंदी स्मारिका" के इस अंक द्वारा आप सभी कार्यालय के सहकर्मियों की मौलिक रचनायें पढ़कर उनके हिंदी ज्ञान तथा रचनात्मकता से प्रेरणा लेंगे ।

अलका

अलका उपाध्याय

महानिदेशक

विषय सूची

क्रसं.	रचना	रचयिता/संकलनकर्ता	पृष्ठ
1	मुम्बई दर्शन	श्री दीपक आशीष कौल निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	1
2	संघर्ष	श्री कैलाश कुमार बिष्ट उप–निदेशक–। (वित्त एवं प्रशा.)	4
3	तकनीक की आवश्यकता (कविता)	श्री भूपेन्द्र सिंह बिष्ट उप–निदेशक–।। (वित्त एवं प्रशा.)	5
4	हिन्दी (कविता)	श्री गिरीश चन्द्र सिंह सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	6
5	एक ब्रह्माण की कहानी	श्री एच.एस.सैनी परामर्शदाता (एडीबी)	7
6	श्राद्ध क्या है पितृ पक्ष का महत्व	श्री रणधीर सिंह परामर्शदाता (वित्त एवं प्रशा.)	11
7	शीर्ष पर हिन्दी	श्री अमित कुमार पाण्डेय युवा अभियन्ता (परि..।।/एडीबी)	13
8	भारत का मुकुट	श्री सत्यदेव सिंह परामर्शदाता (वित्त एवं प्रशा.)	14
9	बचपन	श्री राहुल चराया सी.ए. (वित्त एवं प्रशा.)	15
10	भारत विश्व गुरू	श्री मोहित माथुर कार्यकारी सहायक (तकनीकी)	16
11	लड्डू गोपाल	श्री रामकृष्ण पोखरियाल निजी सहायक (वि. एवं प्रशा.)	18
12	बेटी और भाग्य	श्री पवन स्टोर अटैंडेंट	21
13	निरंतर कृष्ण नाम के जाप का प्रभाव	श्री नवीन जोशी कार्यकारी सहायक (पी–।)	23
14	रिश्तों में जहर घोलता गुस्सा	श्री शुभम शर्मा निजी सहायक (तकनीकी)	25
15	क्या अब हम आजाद हैं	श्री दीपांकर कुमारा कार्यकारी सहायक (परि.।।।)	26
16	विकलांगों के प्रति नजरिया	श्री प्रदीप चितौड़ लेखापाल (वित्त एवं प्रशा.)	27
17	ठाकुर जी की कृपा	श्री विजय इंग्ले प्रोग्रामर	29
18	अध्ययन का आनंद	श्रीमती रेखा जुयाल कार्यकारी सहायक (विश्व बैंक)	33
19	व्यवहार का विवरण	श्री गोकुलानंद फुलारा कार्यालय सहायक (वि. एं प्रशा)	35
20	भगवान को भेंट	श्री भूपाल सिंह बिष्ट कार्यकारी सहायक (वि. एवं प्रशा.)	37
21	शहीदों को समर्पित	सुश्री दीपिका दीवान वरि. का.सहायक (पी–।।।)	39
22	हुनर	सुश्री रेनू शर्मा कार्यालय सहायक (वि. एवं प्रशा)	41
23	ज्ञान का दीपक	श्रीमती वीनू शर्मा वरि. कार्यालय सहायक (पी.।।।)	42
24	अनजानी सलाह	श्रीमती गुलशन निजी सहायक (वि एवं प्रशा.)	43
25	ईश्वर सब जगह विद्यमान है	श्री यतिन्द्र कुमार वत्स परामर्शदाता	45
26	जनसंख्या वृद्धि	सुश्री लक्ष्मीकान्ता निजी सहायक (पी–।।)	46
27	जो भी होता है अच्छा के लिए होता है	श्रीमती प्राची गुसांई कार्यकारी सहायक (पी–।।।)	48
28	भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी का महत्व	मोहम्मद जावेद निजी सहायक (पी–।)	50
29	नारी (कविता)	सुश्री मुस्कान एमटीएस (वि एवं प्रशा.)	52
30	योग से रहे निरोग	श्री रोहित कुमार निजी सहायक (तकनीकी)	53
31	विविध परंपरा	श्री भवानी मिश्र एमटीएस	55
32	एक बच्ची की विश्वास भरी कोशिश	शाहिद स्टेशनरी इंर्चाज	57
33	शून्य की महिमा	श्री उमेश सिंह ऑफिस बॉय	59
34	एक नास्तिक की भक्ति	श्री रितेन सरकार ऑफिस बॉय	60
35	मेरे हिस्से की देशभक्ति	श्री लवली सूदन का. सहायक एवं केयर टेकर (पी–।।।)	62
36	प्लास्टिक पौलिथीन से छुटकारा (कविता)	श्री अनिल कुमार प्रेषक	63
37	हिन्दी तुम परेशान न हो (कविता)	श्री संतोष ऑफिस बॉय	64

मुम्बई दर्शन

दीपक आशीष कौल
निदेशक (वि. एवं प्रशा.)

मुम्बई, जो कि महाराष्ट्र राज्य की राजधानी है, अपने आप में एक बड़ा ही विचित्र शहर है। जहां एक तरफ इस महानगर को "मायानगरी" व "सपनों की दुनिया" जैसे नामों से सम्बोधित किया जाता है वहां दूसरी तरफ इसी मुम्बई में गरीबी, भूख व झुग्गी झोंपड़ियों का बदनुमा रूप भी भरपूर दिखता है। जहां यह महानगर अपने कारोबार के दम पर भारत की वित्तीय राजधानी के नाम से जाना जाता है, वहां यह भी एक हकीकत है की एशिया महाद्वीप का सबसे बड़ा स्लम (झुग्गी झोंपड़ी) भी यहीं पर स्थित है, पर एक बात तो पक्की है कि यह शहर तेज चलने वाले व मौकों का फायदा उठाने वाले लोगों के लिये अतुलनीय अवसर प्रदान करता है जिसके सहारे आदमी धरती से आसमान तक पहुंच सकता है।

मुम्बई, अरब सागर के समुद्रतट पर स्थित है व प्राचीनकाल में यह सात अलग-अलग द्वीपों में बंटा था। हालांकि मध्यकाल में इन द्वीपों के बीच में बसे सागर को भरकर इसको एक बड़ा व स्वर्णिम शहर बना दिया गया है। यहां पर पर्यटकों के देखने लायक कई महत्वपूर्ण व मनोहारी स्थल है, आईए इनका जायजा लेते हैं।

गेटवे ऑफ इंडिया : यह महत्वपूर्ण व शानदार महराब जो कि ठीक समुद्रतट पर स्थित है को सन् 1911 में इंगलैंड के महाराजा जार्ज पंचम के भारत आने की स्मृति में बनवाया गया था। इस इमारत को आपने किसी न किसी हिन्दी चलचित्र में जरूर देखा होगा। यह पर्यटकों के लिए बड़ा ही रमणीक स्थल है व यहां से आप अरब सागर का बड़ा ही बेहतरीन दृश्य देख सकते हैं व ठंडी पवन का आनंद लेते हुए सागर की असीमित अथाहता का अनुभव कर सकते हैं।

एलिफेंटा गुफाए : यह गुफाएं प्राचीन हिन्दी व बौद्ध धार्मिक शिल्पकारों की कला में माहिरता का ज्वलंत प्रतीक है। इन्हें देखने के लिए आपको मुम्बई से एलिफेंटा द्वीप तक की दूरी स्टीमर द्वारा तय करनी पड़ेगी। एलिफेंटा द्वीप जाने के लिए स्टीमर गेटवे ऑफ इंडिया से ही मिलते हैं जो कि एलिफेंटा द्वीप तक जाने व आने तक का दौरा करते रहते हैं। एलिफेंटा द्वीप तक का रास्ता गेटवे ऑफ इंडिया से तकरीबन 1 घंटा लेता है व पर्यटक समुद्री सैर का भी आनंद उठा सकते हैं। यहां की गुफाओं में आप प्रसिद्ध "त्रिमूर्ति" का दर्शन भी कर सकते हैं। एलिफेंटा गुफाएं 1500 से 1000 वर्ष पुरानी है। यहां पर आप विभिन्न पत्थरों से बनी कलाकृतियां व मालाएं वगरैह भी वाजिब दामों में खरीद सकते हैं।

हैंगिंग गार्डेन : यह शानदार गार्डन शहर के बहुत ही प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से है व मलाबार हिल पर स्थित है। इसको कमला नेहरू उद्यान के नाम से भी जाना जाता है। यहां पर आप कई किस्मों के पेड़ों व फूलों का दर्शन कर प्रकृति की खूबसूरती का लुत्फ उठा सकते हैं व एक लाजवाब व यादगार सूर्यास्त देख सकते हैं।

जहांगीर कला गैलरी : यह दक्षिण मुम्बई स्थित गैलरी बहुत ही मशहूर है व यहां पर आप कई प्रसिद्ध कलाकारों के चित्रों व कलाक्रतियों का दर्शन कर सकते हैं। इस गैलरी की इमारत भी काफी भव्य है। गैलरी के बाहर कई चित्रकार अपने चित्रों का प्रदर्शन करते रहते हैं और यदि आप कला के प्रेमी हैं तो उनसे आप अपनी मनपसन्द पेंटिंग खरीद सकते हैं व अपना चित्र भी बनवा सकते हैं।

हाजी अली दरगाह: यह प्रसिद्ध व पावन दरगाह जो कि लगभग 500 वर्ष पुरानी है, शहर के वर्ली इलाके में स्थित है। यह एक मशहूर सूफी संत हाजी अली का मकबरा है। यह संत अपने जीवन के पूर्वार्ध में एक रईस सौदागर थे लेकि बाद में इन्होंने अपनी सारी जायदाद गरीबों के हितार्थ दान कर दी व इनका रूझान मजहब की तरफ हो गया। इनकी पुण्यतिथि पर दरगाह में सालाना उर्स का आयोजन भी किया जाता है।

जुहू बीच गिरगांव चौपाटी : यह दो स्थल मुम्बई के प्रसिद्ध समुद्रतट स्थित वहीं बीच है। चौपाटी बीच शहर के दक्षिण में गिरगांव स्थित है वह जुहू बीच जुहू में है। यहां पर आप शाम को इस महानगरी की चहल पहल का लुत्फ उठा सकते हैं व यहां की मशहूर भेलपूरी, वडा पाव व अन्य पकवानों का सेवन कर सकते हैं। चौपाटी बीच पर से ही आप मशहूर मरीन ड्राईव पर भी घूम सकते हैं व शाम को सागर से बह रही ठंडी पवन का मजा ले सकते हैं। अंधेरा होने पर जैसे ही मरीन ड्राईव पर सड़क की बत्तियां जलती हैं तो उसका दृश्य और भी रोमांचक हो जाता है और यह सभी बत्तियां एक हीरों के हार का रूप ले लेती है जिसे "क्वीन्स नेकलेस" भी कहा जाता है। रात का यह रोमांटिक नजारा पर्यटकों के लिए सचमुच एक सुनहरी यादगार बन जाता है।

तारापोरवाला मछली संग्रहालय: यह संग्रहालय चौपाटी बीच के दूसरी तरफ मरीन ड्राईव पर ही स्थित है व यहां आप विभिन्न प्रकार के समुद्रीय जीव जंतु देख सकते हैं। यह जीव जंतु कई प्रजातियों के हैं जैसे की शार्क, डोल्फिन, समुद्री घोड़ा इत्यादि। बच्चों के लिए यह संग्राहलय यकीनन काफी मनोरंजक है।

इस्कौन मंदिर : यह प्रसिद्ध मंदिर जुहू बीच के समीप ही जुहू इलाके में बना है। इसका प्रबंधन इस्कौन सोसायटी द्वारा सुचारू रूप से किया जाता है। यह मंदिर संगमरमर से बना है व काफी विशाल भी है। यहां पर समय-समय पर विभिन्न प्रकार के धार्मिक क्रिया कलाप जैसे वार्ताएं, कीर्तन इत्यादि का आयोजन भी किया जाता है। मंदिर के प्रागंण में ही "गोविंदा" नामक खान पान गृह भी है जिसमें आप विभिन्न प्रकार के शाकाहारी व्यंजनों का भोज कर सकते हैं। यहां का भोजन बड़ा ही स्वादिष्ट व पवित्र होता है।

पाठकगण ! उम्मीद है कि आप कभी न कभी काम के सिलसिले में अथवा छुट्टी में मुम्बई जरूर आयेंगे और अपने परिवार के साथ इन दर्शनीय स्थलों का भ्रमण जरूर करेंगे।

कैलाश कुमार बिष्ट
उप निदेशक (वि. एवं प्रशा.)

संघर्ष

सुबह टहलना बचपन से ही मेरी कुछ अच्छी आदतों में शुमार रहा है। सौभाग्यवश मेरे घर के बगल में एक छोटा पार्क है जो काफी हरा भरा है। इसलिए मेरी टहलने की आदत बरकरार है। कुछ दिन पहले टहलते हुए एक टहनी से लटकता हुआ एक तितली का कोकून दिखाई पड़ा करीब करीब रोज ही टहलते हुए उन पर मेरी नजर पड़ जाती थी और एक दिन मैंने ध्यान दिया कि उस कोकून में एक छोटा सा छेद बन गया है मैं वहीँ बैठ गया और काफी समय तक देखता रहा। मैंने देखा कि तितली उस खोल से बाहर निकलने की बहुत कोशिश कर रही है पर बहुत देर तक प्रयास करने के बाद भी वो उस छेद से नहीं निकल पाई और फिर वो बिल्कुल शांत हो गई मानो उसने हार मान ली हो। तभी मेरे मन में एक विचार आया क्योंना इस तितली की मदद की जाए। यह सोच मैंने पास में पड़ी एक लोहे की तार को लेकर कोकून को खोलकर इतना बड़ा कर दिया कि वो तितली आसानी से बाहर निकल सके और यही हुआ तितली बिना किसी और संघर्ष के आसानी से बाहर निकल गई पर उसका शरीर सूजा हुआ था और पंख सूखे हुए थे। मैं इस आशा में देखता रहा कि वो किसी भी वक्त अपने पंख फैला कर उड़ने लगेगी पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। इसके उलट बेचारी तितली उड़ ही नहीं पाई और इधर-उधर घिसटते हुए रह गई ।

घर पहुंच कर काफी समय तक मैं उस तितली के बारे में ही सोचता रहा और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि दरअसल कोकून से निकलने की प्रक्रिया को प्रकृति ने इतना कठिन इसलिए बनाया है ताकि ऐसा करने से तितली के शरीर में मौजूद तरल उसके पंखों में पहुंच सके और वो छेद से बाहर निकलते ही उड़ सके। यह जानकर मन व्यथितहुआ कि मैं अपनी अज्ञानता एवं जल्दबाजी में यह समझ ही नहीं पाया।

वास्तव में कभी कभी हमारे जीवन में संघर्ष ही वो चीज होती है जिसकी हमें सचमुच आवश्यकता होती है। यदि हम बिना किसी परिश्रम के सब कुछ पाने लगे तो हम भी एक अपंग के समान हो जाएंगे। बिना परिश्रम और संघर्ष से हम कभी उतने मजबूत नहीं बन सकते जितनी हमारी क्षमता है। इसलिए जीवन में आने वाले कठिन पलों को सकरात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिए तभी कुछ ऐसा सीख पायेंगे जो अपनी जिन्दगी की उड़ान को पंख लगा दे ।

तकनीक की आवश्यकता

भूपेन्द्र सिंह बिष्ट
उप निदेशक (वि. एवं प्रशा.)

समय, विचार, जीवन की धार,
हाथ कर रहे तकनीक से दो–चार।
आधुनिकता की आपाधापी,
वट्सएप और फेसबुक बन गए हैं साथी।
पल–पल, हर पल वट्सएप की रहती है आशा,
अगर न मिले मैसेज तो होती बहुत निराशा,
सारी युवा पीढ़ी हो गई, इस बीमारी से ग्रस्त,
बेचैनी, निराशा, बेसब्री से है सारे त्रस्त।
मेडिकल साइंस में भी नहीं, इस त्रास का कोई उपचार।
एक बार जो गिरफ्त में आए, तो हो जाए बेकार,
हम पर भी इसने, अपना असर है डाला,

भूल गए दीन दुनिया को, ये है गड़बड़ झाला।
मैसेज की टोन सुनते ही फूले नहीं समाते,
अगर न बजे पांच मिनट भी तो बेचैन हो जाते।

इसने बना दिया समन्वय आँख,कान और हाथों का,
लेकिन टूट रहा तारतम्य रिश्ते और नातों का,
पत्नी के डर से भी दिला दी, वट्सएप ने है मुक्ति,
अब नहीं करती वह, व्यर्थ का अलाप,
क्योंकि होता है, वट्सएप से ही सारा वार्तालाप।
अब न ही फटकार लगाती, न करती है गुस्सा,
लेकिन हमारे रिश्तों में, आ गई है एक नीरसता।
अंग्रेजों ने जकड़ा था, हमारे जहन और तन को,
लेकिन वट्सएप ने पकड़ा है, हमारे चंचल मन को,
मन की गुलामी से, हम कैसे मुक्त हो पायेंगे,
वट्सएप से यदि हम इतना प्यार जतायेंगे।
जरूरत जितना नाता तकनीक से जोड़ो,
उपयुक्त को साथ रखो अति का दामन छोड़ो।

हिन्दी

गिरीश चन्द्र सिंह
सहायक निदेशक (वि. एवं प्रशा.)

भूल बैठे हम अपनी भाषा, अंग्रेजी के प्यार में
याद आती है हमको हिन्दी सितम्बर के माह में।
केवल जिन्दा रखने को अपनी झूठी शान
364 दिन हम करते अंग्रेजी का गुणगान।,
एक दिवस (14 सितम्बर) का दिया आरक्षण, अपनी भाषा महान को,
भूल बैठे हैं अपनी भाषा, अंग्रेजी के प्यार में,
याद आती है हमको हिन्दी सितम्बर के माह में।

अंग्रेजी ने बुना है ऐसा आधुनिकता का मायाजाल,
हिन्दी को हम मान चुके हैं, सौतेला और जी का जंजाल,
एक मौका भी नहीं चूकते, हिन्दी के अपमान का,
भूल बैठे हम अपनी भाषा अंग्रेजी के प्यार में,
याद आती है हमको हिन्दी सितम्बर के माह में।

इतनी सुंदर भाषा अपनी जिसका नहीं कोई मोल
मन के उद्‌गारों को व्यक्त करें, सारी गांठे (मन की) खोल
मूक (silent) अक्षरों का नहीं है इसमें कोई दर्जा,
भूल बैठे हम अपनी भाषा अंग्रेजी के प्यार में,
याद आती है हमको हिन्दी सितम्बर के माह में।

सहज, सशक्त, सरल और सुंदर है हिन्दी भाषा,
अंग्रेजी से ही मान बढ़ेगा, क्यों है यह सबकी अभिलाषा,,
मिथ्या अभिलाषा के भ्रम को, भंग करो सब साथी,
हिन्दी को अपना कर बना लो नई परिपाटी,
भूल बैठे हम अपनी भाषा अंग्रेजी के प्यार में,
याद आती है हमको हिन्दी सितम्बर के माह में।

अंग्रेजी के मोह में, हिन्दी से मुख न मोड़ो,
हिन्दी से भी प्यार करो और इससे नाता जोड़ो,
हिन्दी को अपने काम में 365 दिन जोड़ो,
भूल बैठे हम अपनी भाषा अंग्रेजी के प्यार में,
याद आती है हमको हिन्दी, हिन्दी दिवस के त्यौहार में।

एक ब्राह्मण की कहानी

हरि सिंह सैनी
परामर्शदाता (वि. एवं प्रशा.)

पिछले दिनों मैं हनुमान जी के मंदिर में गया था जहाँ पर मैंने एक ब्राह्मण देव को देखा, जो एक जनेऊ हनुमान जी के लिए लेकर आये थे । संयोग से, मैं भी उनके, ठीक पीछे, लाइन में खड़ा था, मैंने सुना वो पुजारी से कह रहे थे कि वह स्वयं का काता (बनाया) हुआ जनेऊ हनुमान जी को पहनाना चाहते हैं, पुजारी जी ने जनेऊ तो ले लिया, पर पहनाया नहीं । जब ब्राह्मण ने पुन: आग्रह किया तो पुजारी बोले यह तो हनुमान जी का श्रृंगार है, इसके लिए बड़े पुजारी जी (महन्त जी) से अनुमति लेनी होगी, आप थोड़ी देर प्रतीक्षा करें वे आते ही होगें । मैं, उन लोगों की बातें गौर से सुन रहा था, जिज्ञासा-वश, मैं भी महन्त जी के आगमन की प्रतीक्षा करने लगा । थोड़ी देर बाद, जब महन्त जी आए, तो पुजारी जी ने, उन ब्राह्मण देव के, आग्रह के बारे में बताया, तो महन्त जी ने ब्राह्मण देव की ओर देख कर कहा, कि देखिए हनुमान जी ने जनेऊ तो पहले से ही, पहना हुआ है और यह फूलमाला तो है नहीं कि एक साथ कई पहना दी जाएं । आप चाहें तो यह जनेऊ हनुमान जी को चढ़ाकर प्रसाद के रूप में ले लीजिए । इस पर उन ब्राह्मण ने बड़ी ही विनम्रता से कहा कि मैं देख रहा हूँ कि भगवान ने पहले से ही, जनेऊ धारण कर रखा है परन्तु कल रात्रि में चन्द्रग्रहण लगा था और वैदिक नियमानुसार प्रत्येक जनेऊ धारण करने वाले को ग्रहणकाल के उपरांत पुराना जनेऊ बदलकर, नया जनेऊ धारण कर लेना चाहिए, बस यही सोच कर, सुबह सुबह मैं हनुमान जी की सेवा में यह ले आया था, परम पूज्य हनुमान प्रभु जी को यह प्रिय भी बहुत है ।

हनुमान चालीसा में भी लिखा है कि - "हाथ बज्र और ध्वजा विराजे, कांधे मूज जनेऊ साजे" ।

अब महन्त जी, थोड़ी सोचनीय मुद्रा में बोले कि हम लोग बाजार का जनेऊ नहीं लेते हनुमान जी के लिए शुद्ध जनेऊ बनवाते हैं, आपके जनेऊ की क्या शुद्धता है ? इस पर वे ब्राह्मण बोले कि प्रथम तो यह कि ये कच्चे सूत से बना है, इसकी लम्बाई 96 चउवा (अंगुल) है, पहले तीन धागे को तकली पर चढ़ाने के बाद तकली की सहायता से नौ धागे तेहरे गये हैं । इस प्रकार 27 धागे का एक त्रिसुत (त्रिगुण) है, जो कि पूरा एक ही धागा है, कहीं से भी खंडित नहीं है, इसमें प्रवर तथा गोत्रानुसार प्रवर बन्धन है तथा अन्त में ब्रह्मगांठ लगा कर, इसे पूर्ण रूप से शुद्ध बनाकर, हल्दी से रंगा गया है और यह सब मैंने, स्वयं अपने हाथ से गायत्री मंत्र जपते हुए किया है । ब्राह्मण देव की जनेऊ निर्माण की इस व्याख्या से मैं तो स्तब्ध रह गया, मन ही मन उन्हें प्रणाम किया, मैंने देखा कि अब महन्त जी, उनसे संस्कृत भाषा में, कुछ पूछने लगे, उन लोगों का सवाल - जबाब तो मेरे समझ में नहीं आया परन्तु महन्त जी को देख कर लग रहा था कि वे ब्राह्मण के जबाब से पूर्णतया सन्तुष्ट हैं । अब वे उन्हें अपने साथ लेकर हनुमान जी के पास पहुँचे, जहाँ मन्त्रोच्चारण कर महन्त जी ने, अन्य 3 पुजारियों के सहयोग से, ब्राह्मण देव को साथ में लेकर, हनुमानजी को, जनेऊ पहनाया । तत्पश्चात पुराना जनेऊ उतार कर उन्होंने बहते जल में विसर्जन करने के लिए अपने पास रख लिया ।

मंदिर तो मैं अक्सर आता हूँ परन्तु आज की इस घटना ने, मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ दी । मेंने सोचा कि मैं भी तो ब्राह्मण हूं और नियमानुसार मुझे भी जनेऊ बदलना चाहिए, उन ब्राह्मण देव के पीछे-पीछे, मैं भी मंदिर से बाहर आया । उन्हें रोककर प्रणाम करने के बाद, मैनें अपना परिचय दिया और कहा कि मुझे भी एक जोड़ी शुद्ध जनेऊ की आवश्यकता है, तो उन्होंने असमर्थता व्यक्त करते हुए, कहा कि बस इस समय तो वह हनुमान जी के लिए ही लेकर आये हैं । हां, यदि आप चाहें तो मेरे घर पर, कभी भी, आ जाइएगा । घर पर, जनेऊ बनाकर मैं रखता हूँ, जो लोग जानते हैं, वे आकर ले जाते हैं ।

मैंने उनसे, उनके घर का पता लिया और उन्हें प्रणाम करके, वहां से चला आया । शाम को उनके घर पहुंचा तो देखा कि वे अपने घर के दरवाजे पर, एक तख्त पर बैठे, एक व्यक्ति से बात कर रहे हैं । मैं अपनी गाड़ी से उतरकर, उनके पास पहुंचा । मुझे देखते ही वे खड़े हो गए, और मुझसे बैठने का आग्रह किया, अभिवादन के बाद मैं बैठ गया, बातों बातों में पता चला कि वहाँ पर मेरे पहिले से आये हुए, वे व्यक्ति भी, पास के रहने वाले हैं और वे भी, ब्राह्मण देव ही हैं तथा उनसे जनेऊ लेने आये हैं । वे ब्राह्मण देव, अपने घर के, अन्दर गए । इसी बीच उनकी दो बेटियाँ जो क्रमश: 12 वर्ष व 08 वर्ष की रहीं होंगी, एक के हाथ में एक लोटा पानी तथा दूसरी के हाथ में, एक कटोरी में गुड़ तथा दो गिलास थे, हम लोगों के सामने गुड़ व पानी रखा गया, मेरे पास बैठे व्यक्ति ने दोनों गिलास में पानी डाला फिर गुड़ का एक टुकड़ा उठा कर खाया और पानी पी लिया तथा गुड़ की कटोरी मेरी ओर खिसका दी, पर मेंने पानी नहीं पीया । कारण कि, आप सभी लोग जानते होंगे, हर जगह का पानी कितना दूषित हो गया है कि पीने योग्य नहीं होता है । घर पर आर.ओ. लगा हुआ है, इसलिए ज्यादातर आर.ओ. का ही पानी पीता हूँ । बाहर रहने पर पानी की बोतल खरीद लेता हूँ। इतनी देर में ब्राह्मण देव, अपने घर से बाहर आए और एक जोड़ी जनेऊ उनको दिया, जो पहले से वहाँ पर बैठे हुए थे । उन्होंने जनेऊ लिया और 21 रुपए ब्राह्मण देव को देकर चले गये । मैं, अभी वहीं रुका रहा, इन ब्राह्मण देव के बारे में और अधिक जानने का कौतुहल मेरे मन में था । उनसे बात-चीत में पता चला कि वे संस्कृत से स्नातक हैं । नौकरी मिली नहीं और पूँजी ना होने के कारण कोई व्यवसाय भी नहीं कर पाए । घर में, वृद्ध माँ, पत्नी, दो बेटियाँ तथा एक छोटा बेटा है, एक गाय भी है ।

वे वृद्ध माँ और गौ-की सेवा करते हैं । विशिष्ट यज्ञों की यजमानी करते हैं, पर साधारणतया यजमानी से दूर रहते हैं । जनेऊ बनाना उन्होंने अपने पिता व दादा जी से सीखा है । यह भी उनके गुजर-बसर में सहायक है । इसी बीच उनकी बड़ी बेटी, पानी का लोटा, वापस ले जाने के लिए आई, किन्तु अभी भी मेरे गिलास में पानी भरा था, उसने मेरी ओर देखा । मुझे लगा कि उसकी आँखें मुझसे पूछ रही हैं कि मैंने पानी क्यों नहीं पिया, मेंने अपनी नजरें उधर से हटा लीं, वह पानी का लोटा और गिलास वहीं छोड़, कर चली गयी । शायद उसे उम्मीद थी कि मैं बाद में पानी पी लूंगा । अब तक मैं इस परिवार के बारे में काफी हद तक, जान चुका था, और मेरे मन में दया के भाव भी आ रहे थे । खैर ब्राह्मण देव ने मुझे एक जोड़ी जनेऊ दिया, तथा कागज पर एक मंत्र लिख कर दिया, और कहा कि जनेऊ पहनते समय इस मंत्र का उच्चारण अवश्य करूं।

मैंने सोच समझ कर 500 रुपए का नोट ब्राह्मण देव की ओर, बढ़ाया तथा जेब और पर्स में, एक का सिक्का तलाशने लगा, मैं जानता था कि 500 रुपए एक जोड़ी जनेऊ के लिए बहुत अधिक है पर मैंने सोचा कि इसी बहाने इनकी थोड़ी मदद हो जाएगी ।

ब्राह्मण देव हाथ जोड़ कर, मुझसे बोले कि श्रीमंत 500 सौ का फुटकर तो मेरे पास नहीं है, मैने कहा अजी, साहबजी मुझे, फुटकर की आवश्यकता नहीं है । आप यह पूरा ही रख लीजिए, तो उन्होंने कहा, नहीं बस मुझे मेरी मेहनत भर के 21 रूपए दे दीजिए। मुझे उनकी यह बात अच्छी लगी कि गरीब होने के बावजूद भी वे लालची नहीं हैं, पर मैने भी, पांच सौ रूपये ही देने के लिए सोच लिया था । इसलिए मैंने कहा कि फुटकर तो मेरे पास भी नहीं है, आप संकोच मत कीजिए, पूरे ही रख लीजिए, आपके काम आएंगे । उन्होंने कहा कि नहीं, मैं संकोच नहीं कर रहा । आप इसे वापस रखिए, जब कभी आपसे दुबारा मुलाकात होगी तब 21 रू. दे दीजिएगा । इन ब्राह्मण देव ने तो मेरी आँखें ही नम कर दीं। उन्होंने कहा कि शुद्ध जनेऊ की एक जोड़ी पर 13-14 रुपए की लागत आती है । 07 - 08 रुपए अपनी मेहनत के जोड़कर, वे इसके 21 रू. लेते हैं । कोई-कोई एक का सिक्का न होने की बात कह कर बीस रुपए ही, दे जाते हैं। मेरे साथ भी यही समस्या थी मेरे पास 21 रू. फुटकर नहीं थे । मैंने पांच सौ का नोट वापस रखा और सौ रुपए का एक नोट उन्हें पकड़ाते हुए, बड़ी ही विनम्रता से, उनसे रख लेने को कहा तो इस बार, वे मेरा आग्रह नहीं टाल पाए और 100 रूपए रख लिए और मुझसे एक मिनट रुकने को कहकर, घर के अन्दर गए, बाहर आकर, और चार जोड़ी जनेऊ मुझे देते हुए बोले, मैंने आपकी बात मानकर सौ रू. रख लिए हैं, अब आप भी, मेरी बात मान कर, यह चार जोड़ी जनेऊ और रख लीजिए ताकी मेरे मन पर भी कोई भार ना रहे । मैंने, मन ही मन उनके स्वाभिमान को प्रणाम किया, साथ ही उनसे पूछा कि इतने जनेऊ लेकर मैं क्या करूंगा, तो वो बोले कि मकर संक्रांति, पितृ विसर्जन, चन्द्र और सूर्य ग्रहण, घर पर किसी हवन पूजन संकल्प, परिवार में शिशु जन्म के सूतक आदि अवसरों पर जनेऊ बदलने का विधान है, इसके अलावा आप अपने सगे सम्बन्धियों रिस्तेदारों व अपने ब्राह्मण मित्रों को उपहार भी दे सकते हैं, जिससे हमारी ब्राह्मण संस्कृति व परम्परा मजबूत होगी, साथ ही साथ, जब आप मंदिर जाएं, तो विशेष रूप से गणेश जी, शंकर जी व हनुमान जी को जनेऊ जरूर चढ़ाएं...। उनकी बातें सुनकर वे पांच जोड़ी जनेऊ, मैंने अपने पास रख लिये और मैं वहाँ से, खड़ा हुआ, तथा वापसी के लिए विदा मांगी, तो उन्होंने कहा कि आप हमारे अतिथि हैं पहली बार घर आए हैं । हम आपको खाली हाथ कैसे जाने दे सकते हैं ?

इतना कह कर उन्होंने अपनी बिटिया को आवाज लगाई । वह बाहर निकली, तो ब्राह्मण देव ने, उससे इशारे में कुछ कहा, तो वह उनका इशारा समझकर जल्दी से अन्दर गयी और एक बड़ा सा डंडा लेकर बाहर निकली । बिटिया के हाथ में, डंडा देखकर मेरे समझ में नहीं आया कि मेरी कैसी विदायी होने वाली है ? अब डंडा बिटिया के हाथ से उन ब्राह्मण देव ने, अपने हाथों में ले लिया और मेरी ओर देख कर मुस्कराए । जबाब में मैने भी मुस्कराने का प्रयास किया । वे डंडा लेकर आगे बढ़े, तो मैं थोड़ा, पीछे हट गया । उनकी बिटिया उनके पीछे पीछे चल रही थी । मैंने देखा कि दरवाजे की, दूसरी तरफ, दो पपीते के पेड़ लगे थे । डंडे की सहायता से, उन्होंने एक पका हुआ, पपीता तोड़ा । उनकी बिटिया वह पपीता, उठा कर अन्दर ले गयी और पानी से धोकर एक कागज में लपेट कर मेरे पास ले आयी और अपने नन्हें नन्हें हाथों से, मेरी ओर बढ़ा दिया । उसका यह निश्छल अपनापन देखकर, मेरी आँखें भर

आईं, मैं अब तक, अपनी भीग चुकी आंखों को उससे छिपाता हुआ दूसरी ओर देखने लगा, तभी मेरी नजर पानी के उस लोटे और गिलास पर पड़ी, जो अभी तक भी वहीं रखे थे । इस छोटी सी बच्ची का अपनापन देख, मुझे अपने पानी न पीने पर, ग्लानि होने लगी । मैंने झट से एक टुकड़ा गुड़ उठाकर मुँह में रखा और पूरे गिलास का पानी एक ही साँस में पी गया । बिटिया से पूछा कि क्या एक गिलास पानी और मिलेगा । वह नन्ही सी परी फुदकती हुई, लोटा उठाकर ले गयी और पानी भर लाई, फिर उस पानी को मेरे गिलास में डालने लगी और उसके होंठों पर तैर रही मुस्कराहट जैसे मेरा धन्यवाद कर रही हो, मैं अपनी नजरें उससे छुपा रहा था, पानी का गिलास उठाया और गर्दन ऊंची कर के वह अमृत पीने लगा, पर मैं अपराध बोध से दबा जा रहा था, अब बिना किसी से कुछ बोले पपीता गाड़ी की दूसरी सीट पर रखा, और अपने, घर के लिए, चल पड़ा । घर पहुंचने पर हाथ में पपीता देख कर मेरी पत्नी ने पूछा कि यह कहाँ से, लेकर आए हो, तो बस मैं उससे इतना ही कह पाया कि एक ब्राह्मण देव के घर गया था तो उन्होंने खाली हाथ आने ही नहीं दिया ।

मैंने जीवन मे ब्राह्मण देवता तो हज़ारों देखे थे, परन्तु ब्राह्मणत्व से परिचय पहली बार हुआ और ऐसा हुआ कि मैं, उस सारी रात को, सो न सका, रह-रह कर उन ब्राह्मणदेव की बातों का स्मरण मुझे होता रहा, जिन्होंने मुझे एक ही दिन में न जाने कितनी ही शिक्षाएं देकर, वे मेरे गुरुतुल्य हो गए ।

श्राद्ध क्या है पितृ पक्ष का महत्व

रणधीर सिंह
परामर्शदाता(वि.एवं.प्रशा.)

भारतीय महीनों की गणना के अनुसार भाद्रपद माह की कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सृष्टि पालक भगवान विष्णु के प्रतिरूप श्रीकृष्ण का जन्म धूमधाम से मनाया गया है। तदुपरांत शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को प्रथम देव गणेशजी का जन्मदिन यानी गणेश महोत्सव के बाद भाद्रपद पक्ष माह की पूर्णिमा से अपने पितरों की मोक्ष प्राप्ति के लिए अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा का महापर्व शुरू हो जाता है। इसको महापर्व इसलिए बोला जाता है क्योंकि नौदुर्गा महोत्सव नौ दिन का होता हैए दशहरा पर्व दस दिन का होता हैए पर यह पितृ पक्ष सोलह दिनों तक चलता है।

हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार अश्विन माह के कृष्ण पक्ष से अमावस्या तक अपने पितरों के श्राद्ध की परंपरा है। यानी कि 12 महीनों के मध्य में छठे माह भाद्रपद पक्ष की पूर्णिमा से (यानी आखिरी दिन से) 7वें माह अश्विन के दिनों में यह पितृ पक्ष का महापर्व मनाया जाता है। सूर्य भी अपनी प्रथम राशि मेष से भ्रमण करता हुआ जब छठी राशि कन्या में एक माह के लिए भ्रमण करता है तब ही यह सोलह दिन का पितृ पक्ष मनाया जाता है। उपरोक्त ज्योतिषीय पारंपरिक गणना का महत्व इसलिए और भी बढ़ जाता है क्योंकि शास्त्रों में भी कहा गया है कि आपको सीधे खड़े होने के लिए रीढ़ की हड्डी यानी बैकबोन का मजूबत होना बहुत आवश्यक है, जो शरीर के लगभग मध्य भाग में स्थित है और जिसके चलते ही हमारे शरीर को एक पहचान मिलती है। उसी तरह हम सभी जन उन पूर्वजों के अंश हैं अर्थात हमारी जो पहचान है यानी हमारी रीढ़ की हड्डी मजबूत बनी रहे उसके लिए हर वर्ष के मध्य में अपने पूर्वजों को अवश्य याद करें और हमें सामाजिक और पारिवारिक पहचान देने के लिए श्राद्ध कर्म के रूप में अपना धन्यवाद अर्थात अपनी श्रद्धाजंलि दें। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस अवधि में हमारे पूर्वज मोक्ष प्राप्ति की कामना लिए अपने परिजनों के निकट अनेक रूपों में आते हैं। इस पर्व में अपने पितरों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता व उनकी आत्मा की शांति देने के लिए श्राद्ध किया जाता है और उनसे जीवन में खुशहाली के लिए आशीर्वाद की कामना की जाती है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार जिस तिथि में माता-पिता, दादा-दादी आदि परिजनों का निधन होता है। इन 16 दिनों में उसी तिथि पर उनका श्राद्ध करना उत्तम रहता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार उसी तिथि में जब उनके पुत्र या पौत्र द्वारा श्राद्ध किया जाता है तो पितृ लोक में भ्रमण करने से मुक्ति मिलकर पूर्वजों को मोक्ष प्राप्त हो जाता है। हमारे पितरों की आत्मा की शांति के लिए श्रीमद भागवत् गीताश या श्भागवत पुराणश का पाठ अति उत्तम माना जाता है। ज्योतिष में नवग्रहों में सूर्य को पिता व चंद्रमा को मां का कारक माना गया है। जिस तरह सूर्य ग्रहण व चंद्र ग्रहण लगने पर कोई भी शुभ कार्य का शुभारंभ मना होता है, वैसे ही पितृ पक्ष में भी माता-पिता, दादा-दादी के श्राद्ध के पक्ष के कारण शुभ कार्य शुरू करने की मनाही रहती है, जैसे-विवाह, मकान या वाहन की खरीदारी इत्यादि।

कैसे करें श्राद्ध पितृ पक्ष में तर्पण और श्राद्ध सामान्यत: दोपहर 12 बजे के लगभग करना ठीक माना जाता है। इसे किसी सरोवर, नदी या फिर अपने घर पर भी किया जा सकता है। परंपरा अनुसारए अपने पितरों के आवाहन के लिए भात, काले तिल व घी का मिश्रण करके पिंड दान व तर्पण किया जाता है। इसके पश्चात विष्णु भगवान व यमराज की पूजा-अर्चना के साथ-साथ अपने पितरों की पूजा भी की जाती है। अपनी तीन पीढ़ी पूर्व तक के पूर्वजों की पूजा करने की मान्यता है। ब्राह्मण को घर पर आमंत्रित कर सम्मानपूर्वक उनके द्वारा पूजा करवाने के उपरांत अपने पूर्वजों के लिए बनाया गया विशेष भोजन समर्पित किया जाता है। फिर आमंत्रित ब्राह्मण को भोजन करवाया जाता है। ब्राह्मण को दक्षिणा, फल, मिठाई और वस्त्र देकर प्रसन्न किया जाता है व चरण स्पर्श कर सभी परिवारजन उनसे आशीष लेते हैं। पितृ पक्ष में पिंड दान अवश्य करना चाहिए ताकि देवों व पितरों का आशीर्वाद मिल सके। अपने पितरों के पसंदीदा भोजन बनाना अच्छा माना जाता है। सामान्यत: पितृ पक्ष में अपने पूर्वजों के लिए कद्दू की सब्जीए दाल-भात, पूरी व खीर बनाना शुभ माना जाता है। पूजा के बाद पूरी व खीर सहित अन्य सब्जियां एक थाली में सजाकर गाय, कुत्ता, कौवा और चींटियों को देना अति आवश्यक माना जाता है। कहा जाता है कि कौवे व अन्य पक्षियों द्वारा भोजन ग्रहण करने पर ही पितरों को सही मायने में भोजन प्राप्त होता है, क्योंकि पक्षियों को पितरों का दूत व विशेष रूप से कौवे को उनका प्रतिनिधि माना जाता है। पितृ पक्ष में अपशब्द बोलना, ईर्ष्या करना, क्रोध करना बुरा माना जाता है व इनका त्याग करना ही चाहिए। इस दौरान घर पर लहसुन, प्याज, नॉन-वेज और किसी भी तरह के नशे का सेवन वर्जित माना जाता है। पीपल के पेड़ के नीचे शुद्ध घी का दिया जलाकर गंगा जल, दूध, घी, अक्षत व पुष्प चढ़ाने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है। घर में गीता का पाठ करना भी इस अवधि में काफी अच्छा माना गया है। यह सब करके आप अपने पितरों का पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। यदि इस अवसर पर अपने पूर्वजों के सम्मान में उनके नाम से प्याऊ, स्कूल, धर्मशाला आदि के निर्माण में सहयोग करें तो माना जाता है कि आपके पूर्वज आप पर अति कृपा बनाए रखते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि पितरों को धन से नहीं, बल्कि भावना से प्रसन्न करना चाहिए। विष्णु पुराण में भी कहा गया है कि निर्धन व्यक्ति जो नाना प्रकार के पकवान बनाकर अपने पितरों को विशेष भोजन अर्पित करने में सक्षम नहीं हैं, वे यदि मोटा अनाज या चावल या आटा और यदि संभव हो तो कोई सब्जी-साग व फल भी यदि पितरों को प्रति पूर्ण आस्था से किसी ब्राह्मण को दान करता है तो भी उसे अपने पूर्वजों का पूरा आशीर्वाद मिल जाता है। यदि मोटा अनाज व फल देना भी मुश्किल हो तो वो सिर्फ अपने पितरों को तिल मिश्रित जल को तीन उंगुलियों में लेकर तर्पण कर सकता है, ऐसा करने से भी उसकी पूरी प्रक्रिया होना माना जाता है। श्राद्ध व तर्पण के दौरान ब्राह्मण को तीन बार जल में तिल मिलाकर दान देने व बाद में गाय को घास खिलाकर सूर्य देवता से प्रार्थना करते हुए कहना चाहिए कि मैंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार जो किया उससे प्रसन्न होकर मेरे पितरों को मोक्ष दें, तो इससे आपके पितरों को मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है व व्यक्ति को पूर्ण श्राद्ध का फल प्राप्त हो जाता है। यदि माता-पिता, दादा-दादी इत्यादि किसी के निधन की सही तिथि का ज्ञान नहीं हो तो इस पर्व के अंतिम दिन यानी अमावस्या पर उनका श्राद्ध करने से पूर्ण फल मिल जाता है।

शीर्ष पर हिन्दी

अमित कुमार पाण्डेय
युवा अभियन्ता (परि.–।।/एडीबी)

हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं एक भाव है, आशा है सद्भाव है
महज 14 सितम्बर की मोहताज नहीं,
मेरी पहचान, शान और मेरा अभिमान है।

हिन्दी संस्कृत की बेटी, उर्दू की दीदी
और अन्य भाषाओं की सखी है,
भाषा यह मीठी है सत्य वचन की देवी है।
जगमग ज्योति है, अमिश्रित बोली है।

राष्ट्र की संस्कृति है, इस पर बनी कई कृति हैं,
कश्मीर से कन्याकुमारी तक गूंजने वाली ध्वनि है।
तुलसी, कबीर, सूर की हिन्दी, जैसे राष्ट्र के माथे पर सजी बिंदी।

हिन्दी तो हमारा गुरूर है, हमारा जुनून है,
लिखना–पढ़ना–बोलना–सुनना सब इसके अनुकूल हैं।
जो भी न समझा महत्व इसका, ज्ञान उसका अपूर्ण है।

काम काज हो सब हिन्दी में अब यह मेरी अभिलाषा है,
जग में इसकी गौरवगाथा हमें सबको बतलाना है,
हो शीर्ष पर हिन्दी भाषा, यह मेरी जिज्ञासा है,
हो शीर्ष पर हिन्दी भाषा, यह मेरी अभिलाषा है।

भारत का मुकुट

सत्य देव सिंह
परामर्शदाता (वि. एवं प्रशा.)

भारत के शहीदों का बलिदान अब रंग लाया है।
इस देश के सपूतों ने अब सपना सच कर दिखाया है।।

पूर्व में हुई गलती को अब सुधारा है।
भारत के शेरों ने छातीतान ललकारा है।।

देश में चारों ओर खुशी की है ब्यार।
आतंकियों की जिन्दगी हो गई दुश्वार।।

भारत माँ के मस्तक पर सजे मुकुट को चमकाया है।
दो झण्डे का चलन छोड़ कश्मीर नई राह पर आया है।।

एक देश एक संविधान का संकल्प सच कर दिखाया है।
इस देश के सपूतों ने अब सपना सच कर दिखाया है।।

बचपन

राहुल चराया
सी.ए.

उम्र छोटी थी पर सपने बड़े हम देखा करते थे,
ये दुनिया प्यारी न थी, हम तो बस खिलौनों पर मरते थे,
जब देखा वो मैंने बचपन का खजाना
किताब कलम और स्याही,
न फिर रोके रूकी ये आंखे, झट से भर आईं।

याद आया मुझे भाई–बहनों के संग झगड़ना
शैतानियां करके मां के दामन से जा लिपटना,
साथ ही याद आई वो बातें, जो मेरी माँ ने समझाई,
न फिर रोके रूकी ये आंखे, झट से भर आईं।

आज तन्हाई में जब वो मासूम बचपन याद आया,
ऐसा लगता जैसे खुशियों ने कोई गीत गुनगुनाया है,
पर जब दिखा सच्चाई का आईना तो फिर हुई रूसवाई,
न फिर रोके रूकी ये आंखे, झट से भर आईं।

मेरी आंखों से गुजरी जो बीते लम्हों की परछाईं,
न फिर रोके रूकी ये आंखे, झट से भर आईं।

वो बचपन गुजरा था जो घर के आंगन में लुढ़कता सा,
मैं भीगा करता था जिसमें वो सावन बरसता सा,
याद आई मुझे, माँ ने थीं जो कभी लोरियां गाई,
न फिर रोके रूकी ये आंखे, झट से भर आईं।

भारत विश्व गुरू

मोहित माथुर
कार्यकारी सहायक (तकनीकी)

इतिहास के पन्नों में भारत को विश्व गुरू यानी पूरी दुनिया का शिक्षक कहा जाता था, क्योंकि भारत देश की प्राचीन अर्थव्यवस्था, राजनीति और यहां के लोगों का ज्ञान इतना समृद्ध था कि पूरब से लेकर पश्चिम तक सभी देश भारत के कायल थे। भारत की समृद्धता और धन को देखकर विदेशी लोगों ने भारत पर आक्रमण करना पड़ा।

हमने अक्सर नेताओं के भाषण मुख्य रूप से माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र सिंह मोदी जी के भाषण में भारत को विश्व गुरू कहा जाता है। सुना है कि इसके कई कारण है जिसमें से मुख्य कारण निम्न हैं:–

1. योग – योग की शुरूआत भारत में ही हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा की गई थी आज के दौर में विभिन्न मानसिक और शारीरिक समस्याओं से निजात पाने के लिए योग ही एक ऐसा रास्ता है जिसे कोई भी अपना सकता है। आज पूरी दुनिया जानती है कि योग के कितने लाभ होते हैं और इसलिए 21 जून को विश्व योग दिवस के रूप में मनाया जाता है।

2. शून्य – गणित के सबसे महत्वपूर्ण अंक शून्य का अविष्कार भी भारत में ही किया गया। सबसे पहले आर्यभट्ट ने दुनिया को शून्य के उपयोग के बारे में समझाया था।

3. चाणक्य नीति – चाणक्य नीति इतनी जबरदस्त है कि आज भी दुनिया और भारत के नेता विदेशी संबंधों को अच्छा बनाने के लिए इसका इस्तेमाल करते है। आचार्य चाणक्य की नीतियों में संपूर्ण जीवन का सार मिलता है फिर चाहे वह सामाजिक हो, आर्थिक हो या राजनैतिक हर क्षेत्र में यह मार्गदर्शक साबित होती रही है।

4. ज्योतिष शास्त्र – भारत ने ज्योतिष शास्त्र के रूप में दुनिया को अनोखी भेंट दी है। यह ज्योतिष गणनाओं से पता चलता है कि यह पृथ्वी गोल है और इसके घूमने से ही दिन रात होते हैं। ज्योतिष शास्त्र से वर्तमान, भूतकाल और भविष्य की भी गणना की जाती है। ज्योतिष शास्त्र आज के युग में सीखना सरल है क्यों कई संस्कृत विद्यालय खुल गए है। इस युग में ज्योतिष शास्त्र का बहुत महत्व है।

5. शल्य चिकित्सा (सर्जरी) – शल्य चिकित्सा का जन्म भी भारत में ही हुआ है। शरीर को ठीक करने वाली इस विधि की शुरूआत सबसे पहले सुश्रुत द्वारा की गई।

6. संस्कृत – इस दुनिया में बोली जाने वाली कई भाषाओं में संस्कृत के शब्द देखने को मिलते हैं। प्राचीन काल में हिन्दी से पहले संस्कृत भाषा का ही उपयोग किया जाता था।

वर्तमान में भी भारत के अनेक उपलब्धियां ऐसी है जो भारत को विश्व गुरू बनाने लायक है।

क. मंगलयान – पहले ही प्रयास में मंगलयान की कक्षा में पहुंच जाना बहुत बड़ी उपलब्धि है। जबकि दूसरे देशों को कई बार प्रयास करने पर ही सफलता मिली।

ख. अनेकता में एकता – भारत में विभिन्न धर्म और संस्कृति के लोग होने के बावजूदर भी सभी में एकता है जो भारत को अतुल्य बनाती है।

ग. इंडियन आर्मी – भारतीय सेना विश्व की चार बड़ी सेनाओ ं में से एक है।

घ. अर्थव्यवस्था – भारतीय अर्थव्यवस्था एशिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

इन सब तथ्यों के अलावा हम जानते हैं कि भारतीय हर क्षेत्र में चाहे वो विज्ञान हो, अर्थव्यवस्था हो, चिकित्सा और स्वास्थ्य हो या देश की शक्ति हो आगे बढ़ते जा रहे हैं और फिर से भारत विश्व गुरू बनने को तैयार है।

लड्डू गोपाल

रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वि एवं प्रशा.)

मंगू नाम का एक बहुत सीधा–साधा व्यक्ति था और एक बस्ती में रहता था। उसी बस्ती में रूपाली नाम की कन्या थी जो कि बचपन से गूंगी और बहरी थी। दोनों एक साथ बड़े हुए। 12 साल की उम्र में मंगू के माता–पिता का स्वर्गवास हो गया। जिस कारण वह पढ़ाई भी नहीं कर पाया। उसने छोटी उम्र में ही माली का काम शुरू कर दिया क्योंकि उसके पिताजी भी माली ही का काम करते थे उसने भी थोड़ा बहुत काम सीखा था। रूपाली और मंगू एक साथ बड़े हुए, रूपाली मंगू का बहुत ध्यान रखती थी और मंगू भी इशारों में उसकी हर बात समझ लेता था। मंगू ने रूपाली का साथ नहीं छोड़ा। समय बीतता गया और दोनों ने शादी कर ली। शादी होने के बाद मंगू बड़ी–बड़ी कॉलोनी में बगीचे की देखभाल और पौधों को पानी देता था। उसके अच्छे व्यवहार और ईमानदारी से उसे बड़ी–बड़ी कॉलोनियों में काम मिल गया। उसी कॉलानी में एक दीनदयाल नाम का सेठ था। मंगू को वहां भी काम मिल गया। दीनदयाल उसकी ईमानदारी और काम से बहुत खुश था। मंगू रोज दीनदयाल के घर के बगीचे में पौधों को पानी और देख रेख किया करता था। एक दिन बगीचे के किसी कोने में मिट्टी खोद रहा था तो उस मिट्टी के अन्दर एक आहट सी आई। ऐसा लगता था कि कोई बाहर आने की कोशिश कर रहा है। मंगू ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया सोचा कि कोई जानवर होगा। एक दिन फिर वह दीनदयाल के घर पहुंचा और उसी जगह गया जहां रोज जाता था। उसने निश्चय किया आज मैं उसे खोदकर रहूंगा। जब उसने खोदा तो वह हैरान हो गया उसमें से एक लड्डू गोपाल निकले। लड्डू गोपाल का शरीर बहुत गर्म था और मिट्टी से लतपथ था। वह हैरान हो गया और भाग–भाग कर लड्डू गोपाल को लेकर घर के अंदर गया और दीनदयाल की पत्नी को को जाकर बोला.श्सेठानी जी यह देखो आपके बगीचे में से यह मुझे लड्डू गोपाल जी मिले।श गोपालजी को देखकर सेठानी का रंग पीला पड़ गया और हैरान हो गई। मंगू को बोली श्तुम इसको क्यों निकालकर लाए होश मंगू बोला कि वहां मुझे रोज आवाज सुनाई देती थी आज मिट्टी को खोदा तो उसमें से यह निकले तो मालकिन चीखते हुए बोली श्बड़ी मुश्किल से मैनें इससे पीछा छुड़ाया था।श दीनदयाल के दो बेटे थऐ सेठानी अपने दोनों बेटों को बहुत प्यार करती थीए उनको सुबह उठाकर तैयार करती, नहालाती, स्कूल के लिए तैयार करती उनके लिए नाश्ता तैयार करती। दीनदयाल जी के घर एक लड्डू गोपाल जी थे जिसको दीनदयाल की माताजी बहुत मानती थी। माताजी के स्वर्गवास होने के बाद दीनदयाल जी ने उन लड्डू गोपाल जी को अपने मंदिर में बड़ी श्रद्धा से रखा। दीनदयाल लड्डू गोपाल को बहुत मानता था। लेकिन सेठानी को लड्डू गोपाल की सेवा करना बड़ा मुश्किल लगता था कि सुबह उठकर इनको स्नान करवाऊं, इनको नए कपड़े पहनाऊँ उनको भोग लगाऊँ ऐसे में तो मेरे बेटों को कौन नहलाएगा, कौन खाना खिलाएगा, कौन तैयार करेगा। बेटों के लाड़ प्यार में सेठानी अंधी हो चुकी थी। इसी कारण उसने एक दिन निश्चय किया किया और घर के बगीचे में लड्डू गोपाल जी को दबा दिया और दीनदयाल को बोल दिया लड्डू गोपाल जी चोरी हो गए। लड्डू गोपाल जी के चोरी होने पर दीनदयाल बहुत दुखी हुए और बहुत रोए। लेकिन वह कर भी क्या सकते। बस उनका ध्यान करते रोज। मंगू ने कहा कि अब मैं इसका क्या करूं तो उन्होंने कहा कि लड्डू गोपाल को तुम अपने पास रखो और यहां से चले जाओ और दुबारा कभी यहां मत आना। क्योंकि सेठानी को डर था कि अगर मंगू ने सेठजी को बता दिया तो वो मुझ पर बहुत गुस्सा करेंगे मुझे घर से निकाल देंगे। इसलिए मंगू

को नौकरी से भी निकाल दिया और आस–पास के घरों से भी यह कह दिया कि मंगू चोर है उसको अपने घर में मत आने देना। सबने उनका विश्वास कर लिया कि मंगू चोर है। मंगू हैरान था कि ऐसा मैंने क्या किया कि सब मुझे चोर कहने लगे। वह बहुत दुखी हुआ। मंगू लड्डू गोपाल जी को कपड़े में लपेटकर अपने घर ले गया और रोता हुआ अपनी पत्नी को इशारों में बताया कि लड्डू गोपाल जी मुझे सेठानी के घर से मिले। लड्डू गोपाल के मिलते ही मेरी नौकरी चली गई मुझ पर झूठा आरोप लगाया। अब मैं इसका क्या करूं। रूपाली ने बड़े प्यार से लड्डू गोपाल जी को उनके शरीर से लगी मिट्टी और जो भी लगा था साफ किया और ठाकुर जी को स्नान करा कर सुन्दर वस्त्र पहनाये और उन्हें घर के कोने में बड़ी श्रद्धा से नीचे रख दिया । मंगू जो कि बहुत उदास था उसको तो लग रहा था कि अब घर कैसे चलेगा। ये सब लड्डू गोपाल के कारण हुआ। लेकिन रूपाली ने मंगू को इशारों से समझाया कि लड्डू गोपाल जी भगवान है यह सब देख लेंगे तुम चिन्ता मत करो और जो होता है अच्छे के लिए होता है। रूपाली ने कहा जो उनके शरीर में मिट्टी लगी थी वो कहां डालूं वह झल्लाकर बोला अपने घर के बाहर जो आंगन है वहां डाल दो। रूपाली ने वैसा ही किया। मंगू को चिंता हुई कि अब घर कैसे चलेगा रात को नींद नहीं आई उसे। लेकिन रूपाली आराम से सोई हुई उसको कोई चिंता नहीं हुई। ठाकुर जी को देखकर एक अलग सा आनंद महसूस कर रही थी। सुबह जब मंगू उठा तो उसने देखा कि आंगन में जिस जगह पर ठाकुर जी के शरीर की मिट्टी उतार कर पत्नी ने फेंकी थी उस जगह पर बहुत ही सुंदर फूल खिल गए और उन फूलों की खूशबू सारे मौहल्ले मे फैल गई। सारे मोहल्ले में लोग सोचने लगे आज इतनी खूशबू कहां से आई। जब सब देखने आए तो मंगू के आंगन में बहुत सुंदर फूल खिले हुए थे, वहां एक व्यक्ति गुजरा और उसने मंगू को कहा कि तूने अपने आंगन में इतने सुंदर फूल खिला लिए यह तो बहुत कीमती है बाजार में इनसे बहुत कमाई होगी। यह सुनकर मंगू हैरान हो गया वह हाथ जोड़ता हुआ ठाकुर जी के पास गया और कहा प्रभु मुझे क्षमा कर दो मैने आपको ना जाने क्या–क्या बोल दिया और रोने लगा ठाकुर जी के चरणो में। उनकी पत्नी मंद–मंद मुस्कराने लगी कि मंगू को भी अब ठाकुर जी पर विश्वास हो गया। मंगू ने सारे फूलों को इक्ट्ठा किया पहला फूल ठाकुर जी के चरणों में रखा। फिर बाजार में जाकर फूलों को बेचा और फूलो के दाम उसे बहुत अच्छे मिले। अब तो वह फूल हर रोज मंगू के आंगन में खिलने लगे और फूलों को बेचकर मंगू माली से मालिक बन गया। दोनों यह सोचने लगे कि दीनदयाल की बीवी ने अपने बच्चों की परवरिश के कारण लड्डू गोपाल जी को मिट्टी मे दबा दिया था आज से लड्डू गोपाल जी हमारी संतान है ताकि हम भी अपनी संतान के कारण कहीं लड्डू गोपाल जी की तरफ हमारा झुकाव कम ना हो जाए। अब मंगू एक बहुत बड़ा फूलों का व्यापारी बन गया था। उसने एक बहुत बड़ा आलिशान मकान भी खरीद लिया। एक दिन जब मंगू घर में नहीं था तो रूपाली घर में अकेली थी तभी एक औरत बुरी अवस्था में दरवाजे पर आई जिसका शरीर बुढ़ापे के कारण बहुत कमजोर हो चुका था। तभी वह रूपाली के दरवाजे पर आकर भूख के कारण जिससे खड़ी नहीं हो पा रही थीए बेहोश होकर गिर गई। रूपाली ने उसे उठाया और अंदर ले गई जब वह उठी तो उसे रूपाली ने भोजन करवाया और इशारें में पूछा कि आप कौन हो लेकिन बहुत कमजोर होने के कारण वह कुछ बता नहीं सकी। जब मंगू घर आया तो उसने उस बूढ़ी औरत को देखा तो उसको पहचानने की कोशिश करने लगा। तभी उसको ध्यान आया कि यह तो दीनदयाल की पत्नी है वह बोली तुम कौन हो तो मंगू बोला कि मैं वही आपका माली मंगू हूं जिस पर आपने चोरी का इल्जाम लगाकर सारे मोहल्ले में झूठ बोलकर मुझे नौकरी से निकाल दिया था। लेकिन आपके मुझ पर बहुत उपकार है आपके दिए हुए लड्डू गोपाल जी के कारण ही आज मैं बहुत संपन्न हूँ। दीनदयाल की पत्नी यह

सुनकर बहुत रोई और मंगू के पैरों में गिरती हुई बोली मुझे लड्डू गोपाल जी के पास ले चलो । संतान के मोह के कारण मैनें ठाकुर जी को मिट्टी में दबा दिया आज वही संतान ने मुझे घर से निकाल दिया। मेरे पति की मृत्यु के बाद ही मेरे बच्चों ने मुझे आंखे दिखानी शुरू कर दी। मेरा सब कुछ छीनकर अपनी पत्नियों के कहने पर मुझे घर से निकाल दिया। शायद यह मेरे बुरे कर्मो का फल है जो आज मुझे भुगतना पड़ रहा है और ये सजा मुझे मिली और लड्डू गोपाल जी के चरणों में फूट–फूट कर रोने लगी और कहने लगी प्रभु मेरे अपराध को क्षमा कर दो। ठाकुर जी तो बहुत ही दयावान और कृपालु हैं । मंगू ने माताजी को उठाया और कहा आपको और कहीं जाने की जरूरत नहीं है यह लड्डू गोपाल जी आपके बेटे की तरह है आज से आप यहां रहोगी अपने बेटे के पास। इसी तरह लड्डू गोपाल जी जिस पर कृपा करते हैं उसको मालामाल कर देते हैं और पाप करने वालों को भी हमेशा क्षमा कर देते हैं।

बेटी और भाग्य

पवन
स्टोर अटैंडेंट

एक साहूकार की सात लडकियां थी। साहूकार ने अपनी सातों बेटियों से पूछा कि तुम किसके भाग्य का खाती हो तो उसकी छः बेटियों ने कह दिया कि पिताजी हम तो आपके भाग्य का खाती हैं लेकिन एक बेटी ने कहा कि मैं तो अपने भाग्य का खाती हूँ। अपनी सातवीं बेटी के जवाब से साहूकार बहुत रूष्ट हो गया और उसने नाई और ब्राह्मण को बुलाकर कहा कि मेरी इस लडकी की सगाई किसी ऐसे घर करके आओ जो दाने दाने के लिए मोहताज हो।

नाई और ब्राह्मण ऐसे परिवार की तलाश करने के लिए नगर – नगर जाने लगे कई दिन बीत जाने के बाद उन्हें एक ऐसा घर मिला गया जोकि दाने दाने का मोहताज था। उस परिवार में एक मां अपने दोनो बेटों के साथ एक गंदी सी कोठरी में रहती थी। उस मां के दोनो लडके मजदूरी करके पेट पालते थे। ब्राह्मण और नाई जब वहां पहुंचे तो उस घर में केवल उन दोनो लडकों की मां ही थी और दोनो बेटे मजूदरी के लिए गये हुए थे।

जब उन्होंने बुढिया से कहा कि हम आपके बडे बेटे के लिए एक रिश्ता लेकर आये है तो वह बुढिया बहुत खुश हुई और उसे आश्चर्य भी हुआ। उन दोनों ब्राह्मण और नाई ने उस बुढिया को एक सोने का टका और नारियल दे दिया और कह दिया कि 16 अक्टूबर को अपने बडे लडके को शादी के लिए भेज देना और वहां से चले गये जब बुढिया के दोनो लडके मजदूरी करके घर वापस आये तो उन्हें भी अपनी मां के मुख से यह आश्चर्यजनक बात सुनकर बडा हर्ष हुआ।

कुछ समय बाद शादी का दिन नजदीक आ गया लेकिन लडके वालों की बिरादरी में से उनके साथ चलने को कोई तैयार नहीं हुआ। बुढिया ने सोने का टका बेचकर दोनों लडको के लिए अच्छे वस्त्र बनवा दिये और उन्हें शादी के लिए विदा किया। दोनो लडके गांव के बाहर जाकर तलाब पर बैठ गये शाम को साहूकार के आदमी दोनो लडकों को अपने साथ लेकर साहूकार के समीप पहुंच गये और रातो रात मामूली तौर पर शादी की सारी रस्म अदा कर दी और उन्हें बिदा कर दिया। साहूकार ने अपनी बेटी को कुछ भी दहेज नहीं दिया उल्टा उससे कहा कि जब तू पैदा हुई थी तब तेरे जनमोत्सव पर मेरे 2000 रूपये खर्च हो गये थे। लडकी को बडा रंज हुआ और उसने अपने पिता से कहा कि यदि मैं लडकी की बजाय लडका होता तो शरीर पर जो वस्त्र हैं उन्हें भी यहीं डाल जाता।

फिर वे तीनों वहां से अपने घर के लिए रवाना हो गये। जब बहू (लडकी) ने देखा कि जिस कोठरी में वे लोग रहते है वह तो बहुत गंदी है चारो और कौनों में फटे चिथडे पडे है। दूसरे दिन उसने सारे चिथडे बाहर फेक दिए और कोठरी को साफ किया। अगले दिन उसने अपने पति और देवर से कहा कि तुम दोनों जंगल से लडकी काटकर लाया करों और मजदूरी करने मत जाया करों। दोनों जंगल से बहुत सारी लकडियां तोडकर ले आये तो बहू ने वे दोनों गठरों को चार गठरों में परिवर्तित कर दिया और उन चारों गठरों को बेचने से उन्हें दो रूपये मिल गये और वे खुशी – खुशी घर आये और हमेशा लकडी ही लाने लगें।

इस प्रकार कुछ रूपये इक्टठा हो गये तो बहू ने उन्हें एक गधा खरीदने को कहा जिससे अधिक लकडियां लाने लगे और उनकी आमदनी भी बढ गई। फिर बहू ने उनसे बाजार से कुछ कपडें मगांये और उन पर बेल बूटे, डिजाईन काढकर उन्हें फिर बाजार में बेच दिया। इससे उसे अच्छे पैसे मिले और अब वह नित्य यही काम करने लगी। इस प्रकार बहू ने काफी पैसे जोड लिये। एक दिन उसने अपनी सास से पूछा कि हमारे पास एक यही कोठरी है या इसके अलावा भी कोई जमीन है तब सास ने कहा कि वह जो सामने हवेली देख रही हो वो हमारी है पर तुम्हारे ससुर जी के भाईयों का कुछ कर्ज हम पर है सो उन्होंने हवेली हमसे ले ली है।

अब बहू ने सोचा कि दोनों भाईयो को कुछ पढाना भी चाहिए सो उसने उनके लिए एक गुरू रख लिया । लकडी बेचकर आने के बाद दोनों खूब जी लगाकर पढने लगे। एक दिन बहू ने अपने पति से कहा कि अब तुम लकडी मत लाया करों सिर्फ दरबार में जाया करों। तुम्हारे पिता इस नगर के धनी सेठ थे। उसकी कुर्सी दरबार में अवश्य होगी। तुम उसका पता लगाओ। उसका पति अब दरबार में आने जाने लगा। सिर्फ उसका देवर ही लकडियां लाया करता था। तब एक दिन वह लकडियों में मरे हुए सांप को भी ले आया । धर लाकर जब उसने लकडियों का गटठर खोला तो उसमें मरे हुए सांप को पाया और उसने वह सांप कोठरी की छत पर फेंक दिया।

संयोगवश से उसी दिन एक चील रानी का हार उठा लाई जब वह चील उस छत से गुज रही थी तब उसने वो हार वहीं छोड दिया और मरा हुआ सांप उठा लिया । बहू यह सारी घटना देख रही थी। उसने रानी का हार उठाकर रख लिया। उधर राजा के सिपाहियों ने चीलों के सभी घोसले छान डाले लेकिन कहीं हार का पता नहीं चला। दिवाली नजदीक आने लगी तो बहू ने हार अपने पति को दिया और कहा कि दरबार में जाओं और इसे राजा को सौंप देना। राजा ईनाम के लिए कहें तो कह देना कल निवेदन करूंगा। राजा हार पाकर बहुत प्रसन्न हुआ उसने लडकें से ईनाम मांगने को कहा तो लडके ने कह दिया कि कल निवेदन करूंगा।

घर आने पर उसकी पत्नी ने कहा कि अब राजा तुमसे ईनाम मांगने को कहे तो पहले उससे वचन ले लेना कही मुकर न जाये। फिर कहना कि दिवाली के दिन सिवा मेरे घर के और कहीं भी रोशनी न हो, आपके महल में भी नहीं। दूसरे दिन लडके ने वैसा ही किया। राजा बडे असमंजस में पड गया पर वचनबद्ध था, अतः उसने नगर में सभी के घर सूचना भिजवा दी कि कोई भी अपने घर में दिवाली के दिन रोशनी न करे। इसके अतिरिक्त राजा ने लडके को और भी ईनाम दिया। दूसरे दिन ही बहू ने सारा कर्ज चुका दिया और ससुर की हवेली में प्रवेश किया। उसने हवेली को साफ करवाया। दिवाली की रात उसने बहुत बढिया रोशनी की । सिर्फ वही एक हवेली रोशनी से जगमगा रही थी और बाकी सारी की सारी नगरी अंधकार में डूबी हुई थी ।

आधी रात को लक्ष्मी ने आकर दरवाजा खटखटाया तो बहू ने कहा कि तू कौन है ? लक्ष्मी ने उत्तर दिया कि मैं लक्ष्मी हूं। बहू ने कहा कि तू तो हमें छोडकर चली गई थी अब क्यों आई है? तब लक्ष्मी ने कहां कि सारे नगर में तो अंधकार ही अंधकार छा रहा है। अतः मुझे यही आने दो। तब बहू ने कहा कि पहले प्रतिज्ञा करों कि फिर न जाओगी । तब लक्ष्मी ने कहां कि मैं तुम्हारे घर से नौ पीढी तक नही जाऊंगी। तब बहू ने दरवाजा खोला और लक्ष्मी ने घर में प्रवेश किया ।

तभी एक फटे चिथडे वाला बदसूरत आदमी घर से बाहर भागने लगा बहू ने कहा कि तू कौन है? तब उसने कहा कि मैं तो दिवाला हूं जब लक्ष्मी जी इस घर में आ गई अब मेरा यहां कोई ठोर नहीं है इसलिए जा रहा हूँ, तब बहू ने उसकी पीठ में एक लात मारी और कहां कि फिर मत आना। फिर कुछ समय बाद इस परिवार की कायापलट हो गई । राजा ने भी लडके को अपने दरबार में उच्च स्थान दे दिया और सब आनन्दपूर्व रहने लगे।

फिर बहू (लडकी) को याद आया कि पिता जी ने कहा था कि मेरे जन्मोत्सव पर 2000 रूपये खर्च हुए थे अतः वे रूपये उसे लौटा देने चाहिए। अतः वह अपने पिता के घर रूपये देने के लिए गई और अपने पिता से कहा कि मेरे जन्मदिन पर जो 2000 तुमने खर्च किये थे वे ले लो लेकिन पिता ले नहीं रहा था और उसे विश्वास हो गया कि हां बेटिया अपने भाग्य का ही खाती है।

निरंतर कृष्ण नाम के जाप का प्रभाव

नवीन जोशी
कार्यकारी सहायक (पी– I)

किसी गांव में एक आदमी के पास बहुत सारी बकरियां थी वह बकरियों का दूध बेचकर ही अपना गुजारा करता था। एक दिन उसके गांव में बहुत से महात्मा आकर यज्ञ कर रहे थे और वह वृक्षों के पत्तों पर चंदन से कृष्ण का नाम लिखकर पूजा कर रहे थे। वह जगह गांव से बाहर थी। वह आदमी बकरियों को वही रोज घास चराने जाता था। साधु हवन यज्ञ करके वहां से जा चुके थे, लेकिन वह पत्ते वहीं पड़े रह गए। तभी पास चरती बकरियों में से एक बकरी ने वो कृष्ण नाम रूपी पत्तों को खा लिया। जब आदमी सभी बकरियों को घर लेकर गया तो सभी बकरियां अपने बाड़े में जाकर मैं मैं करने लगी लेकिन वह बकरी जिसने कृष्ण नाम को अपने अंदर ले लिया था वह मैं मैं की जगह कृष्ण कृष्ण करने लगी क्योंकि उसके अंदर कृष्ण वास करने लगे। तो उसका मैं यानी अहम तो अपने आप ही दूर हो गया। जब सब बकरियां उसको कृष्ण कृष्ण कहते सुनतीं है तो वह कहती यह क्या कह रही हो? अपनी भाषा छोड़ कर यह क्या बोले जा रही है मैं मैं बोल। तो वह कहती कृष्ण नाम रूपी पत्ता मेरे अंदर चला गया। मेरा तो मैं भी चला गया। सभी बकरियां उसको अपनी भाषा में बहुत कुछ समझाती परंतु वह टस से मस ना हुई और कृष्ण कृष्ण रटती रही। सभी बकरियों ने यह निर्णय किया कि इसको अपनी टोली से बाहर ही कर देते हैं। वह सब उसको सींग और धक्के मार कर बाड़े से बाहर निकाल देती हैं । सुबह जब मालिक आता है तो उसको बाड़े से बाहर देखता है, तो उसको पकड़ कर फिर अंदर कर देता है परंतु बकरियां उसको फिर सींग मार कर बाहर कर देती हैं । मालिक को कुछ समझ नहीं आता यह सब इसकी दुश्मन क्यों हो गई। मालिक सोचता है कि जरूर इसको कोई बीमारी होगी जो सब बकरियां इसको अपने पास भी आने नहीं दे रही, तो वह सोचता है कि यह ना हो कि एक बकरी के कारण सभी बीमार पड़ जाए।

वह रात को उस बकरी को जंगल में छोड़ देता है। सुबह जब जंगल में अकेली खड़ी बकरी को एक व्यक्ति जो कि चोर होता है, देखता है तो वह उस बकरी को लेकर जल्दी से भाग जाता है और दूर गांव जाकर उसे किसी एक किसान को बेच देता है। किसान जो कि बहुत ही भोला भाला और भला मानस होता है उसको कोई फर्क नहीं पड़ता की बकरी मै मैं कर रही है या कृष्ण कृष्ण। वह बकरी सारा दिन कृष्ण कृष्ण जपती रहती। अब वह किसान उस बकरी का दूध बेच कर अपना गुजारा करता है। कृष्ण नाम के प्रभाव से बकरी बहुत ही ज्यादा और मीठा दूध देती है । दूर-दूर से लोग उसका दूध उस किसान से लेने आते हैं । किसान जो की बहुत ही गरीब था बकरी के आने और उसके दूध की बिक्री होने से उसके घर की दशा अब सुधरने लगी। एक दिन राजा के मंत्री और कुछ सैनिक उस गांव से होकर गुजर रहे थे उसको बहुत भूख लगी तभी उन्हें किसान का घर दिखाई दिया किसान ने उसको बकरी का दूध पिलाया इतना मीठा और अच्छा दूध पीकर मंत्री और सैनिक बहुत खुश हुए। उन्होंने किसान को कहा कि हमने इससे पहले ऐसा दूध कभी नहीं पिया, किसान ने कहा यह तो इस बकरी का दूध है जो सारा दिन कृष्ण कृष्ण करती रहती है। मंत्री उस बकरी को देखकर और कृष्ण नाम जपते देखकर हैरान हो गया। वो किसान का धन्यवाद करके वापस नगर में राज महल चले गए। उन दिनों राजमाता जो कि काफी बीमार थी कई वैद्य के उपचार के बाद भी वह ठीक ना हुई। राजगुरु ने कहा माताजी का स्वस्थ होना मुश्किल है, अब तो भगवान इनको बचा सकते हैं। राजगुरु ने कहा कि अब आप माता जी को पास बैठकर ज्यादा से ज्यादा ठाकुर जी का नाम लो, राजा जो कि काफी व्यस्त रहता था वह सारा दिन राजपाट संभाल ले या

माताजी के पास बैठे। नगर में किसी के पास भी इतना समय नहीं की राजमाता के पास बैठकर भगवान का नाम ले सके, तभी मंत्री को वह बकरी याद आई जो कि हमेशा कृष्ण कृष्ण का जाप करती थी।

मंत्री ने राजा को इसके बारे में बताया। पहले तो राजा को विश्वास ना हुआ परंतु मंत्री जब राजा को अपने साथ उस किसान के घर ले गया तो राजा ने बकरी को कृष्ण नाम का जाप करते हुए सुना तो वह हैरान हो गया। राजा किसान से बोला कि आप यह बकरी मुझे दे दो। किसान बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर राजा से बोला कि इसके कारण ही तो मेरे घर के हालात ठीक हुए, अगर मैं यह आपको दे दूंगा तो मैं फिर से भूखा मरूंगा। राजा ने कहा कि आप फिकर ना करो, मैं आपको इतना धन दे दूंगा कि आप की गरीबी दूर हो जाएगी। तब किसान ने खुशी-खुशी बकरी को राजा को दे दिया। अब तो बकरी राज महल में राजमाता के पास बैठकर निरंतर कृष्ण कृष्ण का जाप करती। कृष्ण नाम के कानों में पढ़ने से और बकरी का मीठा और स्वच्छ दूध पीने से राजमाता की सेहत में सुधार होने लगा और धीरे-धीरे वह बिल्कुल ठीक हो गई। अब तो बकरी राज महल में राजा के पास ही रहने लगी तभी उसकी संगत से पूरा राजमहल कृष्ण कृष्ण का जाप करने लगा । अब पूरे राज महल और पूरे नगर में कृष्ण रूपी माहौल हो गया ।

एक बकरी जो कि एक पशु है... कृष्ण नाम के प्रभाव से जो सीधे राज महल में पहुंच गई और उसकी "मैं" यानी अहम खत्म हो गई तो क्या हम इंसान निरंतर कृष्ण का जाप करने से हम भव से पार नहीं हो जाएंगे।

रिश्तो में ज़हर घोलता गुस्सा

शुभम शर्मा
निजी सहायक(तक.)

सुमन नामक एक छात्रा जो कक्षा 12वीं में पढ़ती थी पर उसे गुस्सा बहुत आता था | गुस्से में वह किसी से कुछ भी कह देती | घर के सबलोग उसकी इस आदत से बहुत परेशान थे | एक बार उसके पिता ने उसे सबक सिखाने की सोची | उसके पिता ने उसे कुछ कील और हथौड़ा दिया और कहा एक महीने तक हम एक एक्टिविटी करेंगे जिसमे तुम्हे बस एक महीने तक गुस्सा कम करना है उसके बाद तुम चाहो जितना गुस्सा कर सकती हो और जब भी तुम्हे गुस्सा आये और तुम किसी से बुरी तरह बोल दो तो एक कील दीवार में लगा देना और कोशिश करनी है गुस्सा कम करने की, वह तैयार हो गयी | उसे जब भी गुस्सा आता और वह किसी को कुछ बोल देती तो एक कील दीवार में लगा देती | पहले दिन उसने दीवार में 30 कील लगा दी | पर धीरे धीरे दिवार में लगने वाली कील काम होने लगी | 15 ही दिन में उस लड़की ने सबसे बुरी तरह बोलना काम कर दिया | अब उसके पिता ने उससे कहा की अगर तुम एक बार भी गुस्सा करना होने पर किसी से बुरी तरह न बोलो तो अपने द्वारा लगायी हुई कील में से एक कील निकाल देना | लड़की ने वैसे ही किया | 1 महीने के अंत तक दीवार से सब कील निकल गयी | लड़की बहुत खुश हुई की वो इस गेम में जीत गयी | अर अपने पिता जी से कहने लगी देखिये सब कील दीवार से निकल गयी | उसके पिता ने कहा दीवार से कील तो निकल गयी पर क्या दीवार पहले जैसी सुन्दर दिख रही है | दीवार में जगह जगह निशान पढ़ गए हैं | पिता ने अपनी बेटी को समझाया इसी तरह जब तुम गुस्से की हालत में अपशब्द कहते हो तो वह सुनने वाले के मन में और खुद तुम्हारे मन में भी एक गहरा निशान बना देता है, जिसे कभी नहीं मिटाया जा सकता। जब तुम किसी पर गुस्सा करती हो तो तुम्हारे रिश्तो में भी ख़राब निशान छूट ही जाते है और एक दिन यही निशान रिस्तों को भी ख़राब कर देते हैं लड़की के बात समझ में आ गयी और उसने उस दिन से गुस्सा करना बहुत कम कर दिया |

हम जिस पर गुस्सा करते हैं उससे बहुत उल्टा सीधा कह देते हैं और अपने रिश्तो को ख़राब कर देते हैं | गुस्सा करने की हम आदत बना लेते है और जिसे हम दबा सकते है उसी पर गुस्सा करते हैं| जैसे की ऑफिस में बॉस ने कुछ कह दिया हम उससे कुछ नहीं कर सकते तो घर आकर बच्चो को बिना किसी गलती के ही डांट देते हैं | इसलिए हमे हमेशा अपने ऊपर संयम रखना चाहिए जिससे रिश्तों मे कड़वाहट ना घुले और रिश्तो का सम्मान करना चाहिए।

अगर, अगली बार आप को गुस्सा आये, तो उस पर काबू करने की कोशिश कीजिये, और कड़े शब्दों के इस्तेमाल से बचिये ! क्योंकी आपके द्वारा कहे शब्द कभी वापस नहीं आएंगे और आपके पछताने और माफ़ी मांगने के बावजूद स्थायी नुकसान पहुंचा चुके होंगे।

क्या अब हम आजाद हैं ???

दीपांकर कुमरा
कार्यकारी सहायक (परि.।।।)

नींद पूरी भी नहीं होती थी और सुबह के छः बज जाते थे, खुलती-बंद आँखों के साथ ही स्कूल बस में चढ़ जाया करते थे, स्कूल में घुसते ही नींद गेट पर ही जमा कर ली जाती थी। 8 घंटे क्लास रूम में बैठे रहने के बाद वह आखिरी पीरियड में छुट्टी की घंटी की आवाज़ सुनकर जब स्कूल के गेट से बाहर निकलते थे तो लगता था जैसे कोई कैदी सालों बाद सजाकाट कर यरवदा सेबाहर निकला हो।

हमतो घंटों स्कूल में बंद रहते थे परस्कूल की बंदिशें चंचल मन में पनपती शरारतों को कैद ना कर सकीं।

लंच से पहले हीअंग्रेजी की क्लास में टिफ़िन खत्म कर देना, प्रेयर के समय पर कुछ भी बहाना कर के क्लास में ही रुक जाना या फिर कितना भी रोकने के बावजूद असेंबली में ज़ोरों से हंस देना।

सारे नियम कानून एक तरफ थे और हम जैसा कोई बागी,बंदिशों के बीच आजादी की एक मिसाल।

आज हम उम्र के एक नए पड़ाव पर हैं जहां हम आजाद तो है पर.....

सोमवार के डर से अपना एतवार गुजार देते हैं
घडी की सुईओं के इशारों पर नाच लेते हैं

खुद के लिए वक्त तलाशते हैं
ओरों के लिए खुद को तराशते हैं
खर्चों पर अपनी बंदिशे लगाते हैं
चाहे हम कितना भी कमाते हैं

साल में दो बार अपने दोस्तों से मिल पाते हैं
रातों में अकेले पन से खूब बतियाते हैं

सपने जो देखे थे वह बस तकिये पर रह जाते हैं
आगे की चिंता में जीना भूल जाते हैं

लेकिन,
अब हम आजाद हैं।अब सोचता हूं तो लगता है कि ऐसी आज़ादी से अच्छी तो स्कूल की वह कैद थी।

विकलांगों के प्रति नजरिया

प्रदीप चितौड़
लेखापाल

हमारे समाज में विकलांगों के प्रति क्या नजरिया है और क्या विकलांग व्यक्तियों को समान अवसर तथा प्रभावी पुनर्वास की सुविधा मिल रही है या नहीं इस तथ्य पर आधारित यह लेख है। भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतंत्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित करता है और स्पष्ट रूप से यह विकलांग व्यक्तियों समेत एक संयुक्त समाज बनाने पर जोर डालता है। जनगणना 2001 के मुताबिक, देश में 2.19 करोड़ व्यक्ति विकलांगता के शिकार हैं, जो कुल जनसंख्या का 2.13% हिस्सा है। 75% विकलांग व्यक्ति ग्रामीण इलाकों में रहते हैं, तथा 49% विकलांग व्यक्ति साक्षर हैं व 34% रोजगार प्राप्त हैं। पूर्व के मेडिकल पुनर्वास पर जोर डालने की बजाए अब सामाजिक पुनर्वास पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। विकलांगों की बढ़ती योग्यता की पहचान की जा रही है, और उन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल किए जाने पर बल दिया जा रहा है। पांच संयुक्त पुनर्वास केंद्र, चार पुनर्वास केंद्र तथा 120 विकलांग पुनर्वास केंद्र हैं, जो लोगों को विभिन्न प्रकार की पुनर्वास सेवाएं प्रदान करते हैं। पुनर्वास के क्षेत्र में स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन कई राष्ट्रीय संस्थान हैं, जैसे मानसिक स्वास्थ्य तथा न्यूरो विज्ञान राष्ट्रीय संस्थान, बंगलुरू; अखिल भारतीय शारीरिक चिकित्सा तथा पुनर्वास, मुम्बई; अखिल भारतीय वाणी तथा श्रवण संस्थान, मैसूर; केंद्रीय मनोचिकित्सा संस्थान, रांची इत्यादि। इसके अलावा कुछ राज्य सरकार के संस्थान भी पुनर्वास सेवाएं प्रदान करते हैं। साथ ही, 250 निजी संस्थान भी हैं जो पुनर्वास कर्मचारियों के लिए पाठ्यक्रम संचालित करते हैं।

विकलांग व्यक्तियों के स्व रोजगार-के लिए राष्ट्रीय अपंग तथा वित्तीय विकास निगम राज्य की एजेंसियों द्वारा छूट के साथ ऋण मुहैया कराता रहा है। विकलांगों के कल्याण के लिए ग्रामीण स्तर, अंतर्वर्ती स्तर व जिला स्तर पर पंचायती राज संस्थान प्रयासरत है। भारत, एशिया प्रशांत क्षेत्र के विकलांग व्यक्तियों की समानता व पूर्ण भागीदारी की घोषणापत्र का सदस्य है।- भारत एक समावेशिक, अवरोध मुक्त तथा अधिकार समाज के निर्माण की दिशा में प्रयास करने के लिए बिवाको मिलेनियम फ्रेमवर्क का भी सदस्य है। मौजूदा समय में भारत राष्ट्रीय विकलांग व्यक्तियों के अधिकारों तथा गरिमा की रक्षा व समर्थन घोषणापत्र में भाग ले रहा है। राष्ट्रीय नीति मानता है कि विकलांग व्यक्ति देश के लिए - मूल्यवान मानव संसाधन होते हैं, तथा यह ऐसे व्यक्तियों को समान अवसरों, उनके अधिकार की सुरक्षा तथा समाज में पूर्ण भागीदारी का प्रयास करती है। भारत सरकार की तरफ से कराये जा रहे इन प्रयासों के अतिरिक्त क्या समाज भी इस तरफ कोई ध्यान दे रहें हैं सवाल यह है ? हाल ही में टीवी पर एक कार्यक्रम चल रहा था उसमें एक विकलांग बच्चे की माँ अपने बेटे के बारे में बता रही थी के किस तरह उनको समाज की नकारात्मक सोच को झेलना पडता है वह दूसरों की तरह अपने बेटे को किसी रेस्ट्रो में नहीं ले जा सकी यहां तक कि ट्रेन या बस में सफर करते समय भी उन्हें हेय दृष्टि से देखा गया जिससे सौतेले व्यवहार की अनुभूति होते है। कितनी बार उनको ट्रेन में सफर करते समय बच्चे की नादानी की वजह से जबरन उनको ट्रेन से उतार दिया गया । इसके अतिरिक्त हम अपने आसपास देखते हैं कि बस - में सफर करते समय अगर कोई विकलांग आ जाता है तो उसको केवल विकलांग सीट के अलावा कोई और सीट नहीं देता यहाँ तक कि हम किसी को सड़क पार कराने में भी उनकी सहायता करने के किये

तैयार नहीं होते । क्यों इस तरफ ध्यान देने के लिये सिर्फ सरकार ही बाध्य है । क्या इस समाज के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है । क्या हमें सरकार द्वारा चलाये गये इस मुहिम का साथ नहीं देना चाहिये । क्या हमें विकलांग व्यक्तियों की सहायता करने के लिये आगे नहीं आना चाहिये । आखिर वे भी तो इस देश के नागरिक हैं । क्यों हम किसी विकलांग को देख कर नज़र अंदाज़ कर आगे बढ जाते हैं ।

ठाकुर जी की कृपा

विजय इंग्ले
प्रोग्रामर

कृपा प्रसाद एक बहुत ही बड़ा व्यापारी था। सारी जिंदगी उसने धन कमाने में ही लगा दी। अब उसकी उम्र 60 के पार हो चुकी थी। खूब धन कमाकर घर में बीवी बच्चों का पालन पोषण पैसों से बड़ी अच्छी तरह कर रहा था। अब 60 के पार होने के बाद एक दिन अचानक कृपा प्रसाद थोड़ा सा बीमार हो गया।जिसके लिए उसे कुछ दिन घर में रहना पड़ा। कृपा प्रसाद थोड़ा गुस्से वाला और घमंडी था बीमार पड़ने पर घर में केवल उसकी देखभाल करने के लिए नौकर ही तत्पर रहते थे। बच्चे भी सुबह कॉलेज जाते और रात तक वापस आते । किसी को भी कृपा प्रसाद की बीमारी की कोई फिक्र नहीं थी। कृपा प्रसाद यह देखकर बहुत हैरान हुआ कि सारी जिंदगी जिसके लिए मैंने धन कमाया ऐशो आराम की जिंदगी दी आज उनके लिए मेरे पास वक्त नहीं है। वह अपना गुस्सा सारे नौकरों पर निकाल देता था।एक दिन पत्नी जब शाम को वापस आई तो उसने कहा मैं बीमार हूं तुम्हें कोई फिक्र नहीं है मैं तुम लोगों के लिए सारी जिंदगी कमाता रहा तो वह बोली जब हमको आपकी जरूरत थी तब तो आप धन कमाने में लगे हुए थे आप हमें अपनी जिंदगी जीने दे ।इससे कृपा प्रसाद के मन को बहुत आघात लगा । शाम पड़ चुकी थी रात सिर पर थी कृपा प्रसाद का मन बहुत ही उचाट हुआ वह चुपचाप घर से निकल पड़ा नौकरों ने उनको कुछ खाने के लिए कहा तो वह खाने की थाली पटक कर गुस्से से घर से बाहर निकल गया। वह समुंदर के किनारे जाकर अपने मन को शांत करने के लिए टहलने लगा ।तभी उसने देखा वहां एक 20- 25 साल का नौजवान जो कि बहुत ही खूबसूरत मुख पर अजीब सी लालिमा मस्तक पर एक तिलक लगा हुआ गले में माला डाली हुई और समुंदर के किनारे रेत को इकट्ठा करके एक छोटा सा टीला बनाकर उसको 3-4 ठोकरें जोर जोर से मार कर उसको गिरा देता और खूब जोर से हंस रहा था कृपा प्रसाद यह देखकर बहुत हैरान हुआ लेकिन उसने उस लड़के को कुछ नहीं पूछा। लेकिन समुंदर के किनारे आकर उसको थोड़ा सा सुकून मिला था अगले दिन फिर वह शाम को थोड़ा सा टहलने के लिए समुंदर के किनारे गया आज उसने फिर उस लड़के को वहां देखा आज वह कल से भी ज्यादा सुंदर लग रहा था उसके चेहरे पर अजीब सी लालिमा थी मस्तक पर तिलक था हाथ में झोली माला थी। उसने एक बहुत बड़ा रेत का टीला बनाया और उसको पैर से बहुत सारी ठोकरे मार-मार कर खूब प्रसन्न हो रहा था ।कृपा प्रसाद से आज रहा ना गया और वह जाकर बड़ी विनम्रता से उस लड़के से बोला बेटा आप यह क्या कर रहे हो ।खुद ही रेत का टीला बनाते हो और उसको ठोकरें मारकर हंस क्यों रहे हो ।वह लड़का पहले तो कृपा प्रसाद को देखकर हैरान हुआ क्योंकि वो उसको नहीं जानता था लेकिन फिर भी उसने शिष्टाचार के नाते उसको कहा बाबूजी मेरा नाम विमल कुमार है। मैं एक हार्ट(दिल) का डॉक्टर हूं ।सुबह मैं अस्पताल में जाता हूं लेकिन शाम को यहां मैं आकर अपनी इच्छाओं को मारने के लिए यहां आता हूं ।कृपा प्रसाद को कुछ समझ नहीं आया तो विमल कुमार ने विस्तार से उनको बताया बाबूजी यह जो मेरे मस्तक पर तिलक लगा है यह "श्रीजी" है यानी कि मेरे मस्तक पर साक्षात किशोरी जी विराजमान है और हाथ में कृष्ण नाम की माला है जिसको मैं निरंतर जपता रहता हूं। यह शिक्षा मुझे शुरू से ही मेरे माता-पिता ने दी है। अब मैं नाम के प्रभाव से अपनी इच्छाओं को अपने पांचों इंद्रियों पर काबू पाने की कोशिश कर रहा हूं जैसे काम क्रोध लोभ अंहकार और मोह और भी कोई इच्छा हो मैं उसको उस पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करता हूं मैं रोज एक इच्छा को त्याग कर यहां रेत का टीला बनाता हूं और जैसे कि कल मैंने क्रोध पर विजय पाई और उसका टीला बनाकर उसको ठोकरो से मार दिया आज मैंने लोभ पर विजय पाई है इसलिए मैंने एक बड़ा सा टीला

बनाया क्योंकि इंसान का लोभ निरंतर बढ़ता ही रहता है इसलिए आज मैंने बड़ा सा रेत का टीला बनाकर उसको जोर-जोर से ठोकर मारी ताकि मेरे अंदर का लोभ खत्म हो जाए। कृपा प्रसाद यह सुनकर बहुत हैरान हुआ लेकिन उसको यह बातें अब भी समझ नहीं आ रही थी ।विमल कुमार को पता लग गया कि अभी बाबू जी को मेरी बातों की पूरी तरह समझ नहीं आई तो वह कहता बाबूजी चलो आप को मैं अपने घर लेकर चलता हूं ।वहां मैं आपको विस्तार से सब कुछ समझाता हूं मेरा घर पास ही है। कृपा प्रसाद को घर जाने की कोई जल्दी नहीं थी क्योंकि घर में तो कोई उसका इंतजार करने वाला नहीं था ।इसलिए वह विमल कुमार के साथ उसके घर चला गया उसका घर एक छोटा सा बहुत ही व्यवस्थित ढंग से सजा हुआ था। घर में अजीब तरह की सुगंध आ रही थी। घर में दाखिल होते ही विमल कुमार ने अपने मां को आवाज दी मांजी आज हमारे घर मेहमान आए हैं तो उसकी मां जल्दी से बाहर आई और आकर कृपा प्रसाद को बोलती राधे राधे भैया जी। आप यहां विराजो ।तभी विमल कुमार के पिताजी भी बाहर आ गए और साथ में विमल कुमार की बहन माधवी भी बाहर आ गई। सबने आकर कृपा प्रसाद को जो कि उनसे पहले कभी नहीं मिले थे लेकिन उन सब ने उनको राधे-राधे किया और उनके साथ ऐसे घुलमिल गए जैसे कि उनको बरसों से जानते हो । कृपा प्रसाद को यहां आकर बहुत अच्छा लगा तभी विमल कुमार ने कहा कि यह मेरे पिताजी हैं जो कि एक सरकारी स्कूल में अध्यापक हैं यह बहुत ही इमानदार अध्यापक है उन्होंने बचपन से हमें ईमानदारी की और मेहनत की कमाई की रोटी खिलाई है आज हमारे शरीर में ईमानदारी के साथ-साथ उनकी मेहनत से कमाई हुई रोटी के साथ इनका मेहनत का पसीना भी आज हमारी रगों में दोड रहा है इन्होंने मुझे पढ़ा लिखा कर एक हार्ट सर्जन बनाया है उसके साथ साथ इन्होंने हमें खूब अच्छे संस्कार दिए हैं ।यह मेरी माता जी हैं जो कि सुबह उठकर हमारे घर के सरकार राधा कृष्ण जी की खूब सेवा करती है और भोजन बनाते बनाते हैं यह मंत्र का जाप करती रहती है और ठाकुर जी को भोग लगाती हैं उसी भोजन में हमें ठाकुर जी के नाम की शक्ति प्राप्त होती है सारी बातें सुनकर कृपा प्रसाद बहुत ही अचंभित हो रहा था कि एक ऐसी भी दुनिया है मैं तो सारी उम्र पैसे कमाने मे हीं लगा रहा अभी रात का समय हो चला था तो कृपा प्रसाद जाने लगा लेकिन उसके घर के सभी सदस्य कहने लगे आप हमारे घर में मेहमान है और हमारे घर आए हुए मेहमान कभी भी बिना खाना खाए नहीं जाता । कृपा प्रसाद काफी देर से घर से निकला हुआ था कृपा प्रसाद को भूख भी लगी हुई थी इसलिए वह मना ना कर पाया सब ने जमीन पर चौकी बिछाकर मिलकर भोजन किया । उसने जब पहला कोर अपने मुंह में डाला तो हैरान हो गया कि खाना है या अमृत । इतना स्वादिष्ट भोजन उसने कभी भी नहीं खाया था। भोजन में केवल दाल रोटी सब्जी और चावल थे उसमें भी उसको इतना आनंद आया। वह विमल कुमार को बोला आप लोग धन्य हो एक मैं हूं जिसके घर में इतना धन होने के बाद भी सुकून नहीं है ।तो विमल कुमार ने कहा रूको बाबूजी तो उसने मंदिर में जाकर कृपा प्रसाद के मस्तक पर श्री जी का तिलक लगा दिया तो मस्तक पर तिलक लगते ही अचानक से कृपा प्रसाद गिरते-गिरते बचा और उसने कहा कि तिलक लगाते ही मुझे अचानक से क्या हो गया जैसे जोर से झटका लगा हो तो विमल कुमार और उसके पिताजी मुस्कुरा कर बोले कृपा प्रसाद जी यह तिलक नहीं यह आपके लिए किशोरी जी की कृपा की घंटी है जो अब बज चुकी है ।ना जाने आपने पिछले जन्म में कोन से अच्छे कर्म किए थे जो आपको इस उम्र में आकर भक्ति का मार्ग पता चलने लगा है। नहीं तो कितने धनवान लोग ऐसे ही भगवान का नाम लिए बगैर इस दुनिया से चले जाते हैं ।लेकिन ना जाने आप पर किशोरी जी की कैसे कृपा हो गई । जो यह श्री जी का तिलक आपके मस्तक पर शोभायमान हुआ है ।कृपा प्रसाद चुपचाप यह सुन रहा था आज उस का मन बहुत प्रसन्न था। रात को वह जब घर गया तो घर के

नौकर उसको देखकर सहमे हुए थे कि आज मालिक देर से वापस आया है इसका गुस्सा हम सब टूटेगा लेकिन आज वह बहुत ही अच्छे मूड में था उसने नौकरों को अपनी बीवी को बच्चों को कुछ नहीं कहा चुपचाप जाकर अपने कमरे में जाकर सो गया। लेकिन सारी रात उसको नींद ही नहीं आई वह बार-बार अपने मस्तक पर लगे श्रीजी के तिलक को हाथ लगा कर देख रहा था जब हाथ लगाता था तब तब उसके शरीर में अजीब सी हलचल होती जैसे वह किसी देवी के चरणों को छू रहा है। बड़ी मुश्किल से उसने अपनी रात काटी।सुबह उठा तो उस से रहा ना गया और वह सुबह सुबह ही विमल कुमार के घर गया और उनको कहने लगा कि आप किस देवता का पूजन करते हो तो विमल कुमार तो घर नहीं था लेकिन उसकी माता जी और बहन घर पर थी उन्होंने कहा कि हमारे घर की रोनक हमारे कृपा सरकार किशोरी जी और ठाकुर जी हैं यह बहुत करुणामई है। जिंदगी में एक बार ठाकुर जी और किशोरी जी का नाम लेने से ही जिंदगी के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं।कृपा प्रसाद को यह घर किसी मंदिर से कम नहीं लग रहा था तभी अचानक से विमल कुमार उसके पिताजी भी घर पर आ गए तो विमल कुमार के पिता जी ने कृपा प्रसाद को एक छोटी सी राधा कृष्ण की प्रतिमा जो की एक ही रूप में थी उसको दी और उसने कहा कि तुम इसको घर ले जाओ और एक झोली माला दी और कहा कि इससे हरे कृष्ण का जाप निरंतर करो तो तुम्हारा घर भी स्वर्ग से सुंदर हो जाएगा। कृपा प्रसाद ने विमल कुमार की माता जी को कहा कि क्या आज आप मुझे फिर भोजन कराएंगे मुझे आपके भोजन में अमृत का स्वाद आ रहा था ।तो विमल कुमार की माता जी बोले क्यों नहीं उसने कहां की आप भी ठाकुर जी और किशोरी जी को भजो और उनको भोग लगाओगे तो आपके घर में भी अमृत रूपी प्रसाद बनेगा। विमल कुमार चुपचाप सुनता रहा ।भोजन को पाकर और हाथ में ठाकुर जी और किशोरी जी की प्रतिमा को लेकर वह घर गया और घर जाकर अपने कमरे में जाकर उस प्रतिमा को अपने कंठ से लगा कर खूब रोया। यह तो उस पर एक तरह की कृपा ही थी तभी उसने देखा कि अचानक से उसकी पत्नी उसके कमरे में आई और कहने लगी आज आपकी तबीयत कैसी है ।यह सुनकर वह हैरान हो गया पत्नी के साथ साथ उसके बच्चे भी कमरे में आ गए और कहने लगे पिताजी हमें नहीं पता था कि आप बीमार हो अब आपकी तबीयत कैसी है। यह देखकर कृपा प्रसाद खूब हैरान हुआ तभी उसकी नजर अपने हाथ में पकड़े ठाकुर जी पर पड़ी उसने देखा ठाकुर जी और किशोरी जी मन्द मन्द मुस्करा रहे थे ।वह मन में सोचने लगा यह जरूर इनकी ही कृपा है जो मुझ पर होनी शुरू हो गई है अब तो उसका विश्वास और पक्का होना शुरू हो गया। सुबह जब नहा धोकर उसने ठाकुर जी की सेवा की धूप अगरबत्ती की और उसने सोचा कि आज मैं अपने हाथ से भोजन बनाकर ठाकुर जी को भोग लगाऊंगा। लेकिन तभी उसने देखा उसकी पत्नी पहले से ही रसोई घर में बैठी हुई है और कोई भोजन बना रही है वह यह देखकर हैरान हो गया जो औरत सारी जिंदगी घर की रसोई में नहीं गई आज कैसी कृपा हुई है ।उसकी पत्नी ने बहुत ही स्वादिष्ट कडी चावल बनाए थे वही कडी चावल ठाकुर जी को भोग लगाएं बाद में कडी चावल का भोग खाने लगे ।तो सभी ने मिलकर एक ही जगह बैठकर भोजन किया ।कृपा प्रसाद को आज बहुत ही अच्छा लगा और जब उसने भोजन का पहला कोर मुंह में डाला तो इतना हैरान हुआ क्योंकि विमल कुमार के घर के भोजन् जैसा ही स्वाद उनके घर के भोजन मे भी था वह एक कोर मुंह में डालता और उसकी आंखों में आंसू निकलते जाते भोजन के साथ साथ आज वो आंसू भी अपने अंदर भोजन के साथ खाए जा रहा था। आज उसको बहुत ही सुकून मिल रहा था ।वह पूरे परिवार को अपने पास बैठे देखकर ठाकुर जी का लाख-लाख धन्यवाद कर रहा था ।ऐसे श्री जी और ठाकुर जी की कृपा ,

कृपा प्रसाद के ऊपर हुई ।उसी दिन वह विमल कुमार के घर गया और वह विमल के चरणों में पड़ गया और कहने लगा तुम वास्तव मे दिल के डाक्टर हो जो तुने मेरे अंहकारी दिल का इलाज ठाकुर जी और किशोरी जी के नाम के ओजारों से किया है । इसलिए हमें भी निरंतर ठाकुर जी का नाम जपते हुए अपने पांचों इंद्रियों काम क्रोध मोह लोभ अंहकार पर काबू पाएंगे तभी हमें ठाकुर जी की कृपा प्राप्त हो सकती है ।दिखावे से की गई भक्ति केवल यही रह जाएगी। लेकिन जब हम अपने पांचों इंद्रियों पर काबू पाकर अपनी इच्छाओं को मारकर ठाकुर जी का नाम लेंगे तभी हमें ठाकुर जी की शरण प्राप्त होगी और उनकी कृपा दृष्टि हम पर सदा बनी रहेगी।

अध्ययन का आनंद

रेखा जुयाल
कार्यकारी सहायक (विश्व बैंक)

मनुष्य को सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए कर्म करने की आवश्यकता पड़ती है । कर्मप्रधान व्यक्ति ही जीवन में वास्तविक सुख का आनंद प्राप्त कर सकता है । अकर्मण्यता मनुष्य को निराश और भाग्यवादी बनाती है । मनुष्य के कर्म अनेक प्रकार के होते हैं । कुछ कर्म तो वह अनिच्छापूर्वक बाध्यता के साथ करता है परंतु मनोयोग से किया गया कृत्य ही उसे सच्चा आनंद प्राप्त कराता है । इन समस्त क्रियाओं मेरे विचार से अध्ययन सर्वश्रेष्ठ है । अध्ययन प्रिय व्यक्ति स्वयं को सदैव प्रसन्नचित्त अनुभव करता है ।

अध्ययन में मनुष्य की अभिरुचि सदैव उसे उत्थान की ओर ले जाती है । किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नागरिक जितना ही अध्ययन को महत्व देंगे वह राष्ट्र उतना ही प्रगतिशील होगा । समस्त विकसित देश, विकासशील देशों से इसलिए अग्रणी हैं क्योंकि उन्होंने प्रारंभ से ही अध्ययन को महत्व दिया । शिक्षा का उनका स्तर हमारी तुलना में कहीं अधिक ऊँचा है । अतराष्ट्र का : विकास तभी संभव है जब वह देश में अध्ययन को महत्व देता है । अध्ययन से मनुष्य का चारित्रिक विकास होता है । अपनी भौतिक शिक्षा के अतिरिक्त वह उन नैतिक मूल्यों को भी ग्रहण करता है जो उसमें आत्मबल व आत्मसंयम प्रदान करते हैं । अध्ययन अर्थात् पुस्तकों में रुचि रखने वाला व्यक्ति स्वयं को कभी भी एकाकी महसूस नहीं करता है । मुसीबत व परीक्षा की घड़ी में पुस्तकें ही उसका परम विश्वसनीय मित्र होती हैं । उसकी सभी समस्याओं का हल उसे उन पुस्तकों के अध्ययन से प्राप्त हो जाता है । इस प्रकार अध्ययन से प्राप्त आनंद असीमित है । विज्ञान व तकनीकी से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन कर वह खगोलीय व धरातल के रहस्यों को उजागर करता है । रहस्यों की जितनी परत खुलती जाती है मनुष्य उतना ही अधिक हर्षोल्लास व रोमांच का अनुभव करता है । इसी प्रकार साहित्य से संबंधित पुस्तकों के माध्यम से वह मानवीय संवेदनाओं को लिखकर व उनका अध्ययन कर उन्हें प्रकट कर सकता है । साहित्य में निहित कविताएँ, लेख, नाटक, कहानियाँ व उपन्यास आदि के माध्यम से वह मानव ध्येय की संवेदनाओं को छूता है जो उसे पुलकित करती हैं ।

अध्ययन की अभिरुचि से ही मनुष्य कालिदास, मिल्टन व शेक्सपियर जैसे महान लेखकों के महान लेखों का आनंद उठा सकता है । अध्ययन में रस प्राप्त करने वाला व्यक्ति देशविदेश- में होने वाली घटनाओं की जानकारी रखता है । ऐसे व्यक्ति शोषण का शिकार नहीं हो सकते अर्थात् अध्ययन उनकी उन आपदाओं से रक्षा करता है जो प्राय: निरक्षर व्यक्तियों को अपनी चपेट में ले लेती हैं । बुद्धिमानों और विद्वानों ने पुस्तकों को मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ साथी बताया है। मनुष्य चाहे तो उसका यह साथी घरबाहर- प्रत्येक कदम पर उसके साथ रह सकता है। घर में अकेले हैं, समय नहीं कट रहा, कोई पुस्तक उठाकर पढऩा शुरू कर दीजिए, समय कब बीत गया, पता ही नहीं चलेगा। अकेले बस या ट्रेन में सफर कर रहे हैं। यात्रा बोझिल लग रही है। बस, झोले में से निकालकर कोई पुस्तक या पत्रिका पढऩा शुरू कर दीजिए। सफर कब कट गया, जान तक न सकेंगे। है न पुस्तक जीवन का सर्वश्रेष्ठ साथी। इतना ही नहीं, मन किसी उलझन में पड़ गया है, किसी चिंता ने आ

दबोचा है, घबराइए नहीं। कोई अच्छीसी पुस्तक-, किसी सफल महापुरुष की जीवनी निकालकर पढऩे लगिए। कोई कारण नहीं कि उलझन का सुलझाव और समस्या का समाधान न हो जाए। अच्छी पुस्तकों में जीवन को सफल सार्थक बनाने वाले, हमारी उलझनों ओर समस्याओं को सुलझाने वाले अनगिनत उपाय भरे पड़े हैं। वे उपाय मन को आनंदित ते करते ही हैं, कई बार चौंका भी देते हैं और तब हम कहने को बाध्य हो जाया करते हैं किबस-, इतनीसी- बात के लिए ही हम लोग व्यर्थ में परेशान हो रहे थे। इससे स्पष्ट है कि पुस्तकों का अध्ययन हमें आनंद तो देता ही है, एक अच्छे मित्र के समान हमारे लिए मनोरंजन की सामग्री भी जुटाता है, साथ में अच्छे मित्र के समान ही हमें समयसमय पर सत्परामर्श देकर हमारी समस्याओं का समाधान भी करता है। इन- तथ्यों के आलोक में अध्ययन को हम एक अच्छा पथप्रदर्शक कह सकते हैं।- फिर भी यह बात व्यक्ति की अपनी रुचि और परिस्थिति पर अवलंबित है कि वह किस प्रकार की पुस्तकों का अध्ययन करे, या करता है। कुछ लोग सामान्य और सस्ती रुचि वाली पुस्तकें पढऩा ही पसंद करते हैं। यह ठीक है कि इस प्रकार का अध्ययन समय भी बिता देता है और सामान्य स्तर पर हमारा मनोरंजन भी कर देता है, पर इस प्रकार की सस्ती पुस्तकों को बढऩे का अंतिम परिणाम अच्छा नहीं हुआ करता। अतकुरुचिपूर्ण :, अश्लील औश्र भावों को भडक़ाने वाली पुस्तकों को दूर से ही नमस्कार कर देना चाहिए। इसी में व्यक्ति, घरपरिवार-, समाज और सारे राष्ट्री की भलाई है। अध्ययन सामान्य हो या गंभीर, व्यक्ति की सुरुचि के अनुरूप ही होना चाहिए।

लोग भिन्नभिन्न रुचियों और लक्ष्यों से अध्ययन में प्रवृत हुआ करते हैं। कुछ- लोग धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में रुचि रखते हैं जबकि दूसरे साहित्यिक पुस्तकों के अध्ययन में। जो हो, सत्य यह है कि रुचि के अनुरूप और कभीकभी- स्वाद बदलने के लिए अन्यान्य विषयों के अध्ययन का आनंद ही निराला है। यह आनंद स्वंय में तो स्वस्थ हुआ ही करता है, जीवन और समाज को भी स्वास्थ्य प्रदान करता है। अतहित्यप्रत्येक व्यक्ति के रुचि और प्रयत्न करके सत्सा : के निरंतर अध्ययन की आदत डालनी चाहिए। इसमें प्रवृत्त होने पर ही उन सुख एंव बातों का अनुभव संभव हो सकेगा जो पीछे कही गई हैं और जिनके द्वारा महान कहे जाने वाले व्यक्तियों ने महानता अर्जित करने में सफलता प्राप्त की। अध्ययन का सहज जीवननों की सीढ़ी कह सकते हैं।यापन ओर सफलता दो-

व्यवहार का विवरण

गोकुलानंद फुलारा
कार्यालय सहायक(वि.एवं.प्रशा)

दिलों में प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।
है जो बंद सीने में दबी कहीं,
छलकाकर उसे किसी का उधार कर दो ।
दिलों में प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।

ख्वहिसों के बादल रोज आते है,
आके कहीं फिर छिप जाते है ।
उछालकर पत्थर मेहनत और लगन का,
चलो धरती से गगन का मिलान कर दो।
दिलों में प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।

कलह बहुत है ज़िंदगी में भरी, एक दूसरे के प्रति,
छोड़ो, रहने दो, माफ करो,
इंसान से इंसान में कम्बखत ये प्यार भर दो ।
दिलों में प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।

है जो भूखा उसके लिये अनाज भर दो,
मैं से हम का तीर कमान भर दो,
देखो, जो देख पाओ, सुनो जो सुन पाओ,
अगर, कह सको तो तारीफ करके किसी के प्राण भर दो।
दिलों में प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।

प्रबल होके दृढता का विश्वास भर दो,
पराक्रम से अपने कीर्तिमान कर दो,
प्रतिशोध जो मन का कलह है।
सु-मार्ग मे चल कर सबका मार्ग भर दो।

असहिष्णुता व निराशा मे आशा भर दो,
तुम ये कह सको आज, वो आवाज भर दो,
शब्दों में वो जादू है जिसके जादूगर हम ही तो है,
क्यो न इसमें वह सम्मान भर दो।
दिलो मे प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।

खुद के नक्षत्रों मे, अपना भगवान भर दो,
शुद्ध, स्पष्ट शब्दो से जीवन का विमान भर दो।
शब्दों के व्याकरण मे उलझी ज़िंदगी जो है
अनुभूति से खुद की ज़िंदगी का ताज भर दो,
दिलों में प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।

सौभाग्य से मिलीं ज़िंदगि मे ठेहराव भर दो,
रौशनी से अपनी सूरज चाँद भर दो,
वर्षों से चली आ रही प्रथा, जो है
तोड़कर उसे अपना निशान भर दो
दिलो मे प्यार का संचार भर दो,
लेके हाथों में हाथ चलो व्यवहार भर दो ।

कलाकार की कला का सार भर दो,
राजस्व से राजा का राज भर दो,
माटी के पुतले से अहंकार को निकालकर तो देखो
कुछ ऐसा बस तुम आज कर दो
कुछ ऐसा बस तुम आज कर दो

ऐसी हवा चलेगी दोस्तों,
असहिष्णुता के सारे बादल छट जाएँगे ,
कहेगें कुछ नहीं शब्दों मे बस अंदर बस जाएँगे ।

भगवान को भेंट

भूपाल सिंह बिष्ट
कार्यकारी सहायक (वि.एवं प्रशा.)

एक सेठ के पास एक व्यक्ति काम करता था। सेठ उस व्यक्ति पर बहुत विश्वास करता था। जो भी जरुरी काम हो सेठ हमेशा उसी व्यक्ति ूसे कहता था। वो व्यक्ति भगवान का बहुत बड़ा भक्त था । वह सदा भगवान के चिंतन भजन कीर्तन स्मरण सत्संग आदि का लाभ लेता रहता था। एक दिन उस ने सेठ से श्री जगन्नाथ धाम यात्रा करने के लिए कुछ दिन की छुट्टी मांगी सेठ ने उसे छुट्टी देते हुए कहा- भाई ! "मैं तो हूं संसारी आदमी हमेशा व्यापार के काम में व्यस्त रहता हूं जिसके कारण कभी तीर्थ गमन का लाभ नहीं ले पाता। तुम जा ही रहे हो तो यह लो 100 रुपए मेरी ओर से श्री जगन्नाथ प्रभु के चरणों में समर्पित कर देना।" भक्त सेठ से सौ रुपए लेकर श्री जगन्नाथ धाम यात्रा पर निकल गया। कई दिन की पैदल यात्रा करने के बाद वह श्री जगन्नाथ पुरी पहुंचा। मंदिर की ओर प्रस्थान करते समय उसने रास्ते में देखा कि बहुत सारे संत, भक्त जन, वैष्णव जन, हरि नाम संकीर्तन बड़ी मस्ती में कर रहे हैं। सभी की आंखों से अश्रु धारा बह रही है। जोर-जोर से हरि बोल, हरि बोल गूंज रहा है। संकीर्तन में बहुत आनंद आ रहा था। भक्त भी वहीं रुक कर हरिनाम संकीर्तन का आनंद लेने लगा। फिर उसने देखा कि संकीर्तन करने वाले भक्तजन इतनी देर से संकीर्तन करने के कारण उनके होंठ सूखे हुए हैं वह दिखने में कुछ भूखे भी प्रतीत हो रहे हैं। उसने सोचा क्यों ना सेठ के सौ रुपए से इन भक्तों को भोजन करा दूँ।उसने उन सभी को उन सौ रुपए में से भोजन की व्यवस्था कर दी। सबको भोजन कराने में उसे कुल 98 रुपए खर्च करने पड़े। उसके पास दो रुपए बच गए उसने सोचा चलो अच्छा हुआ दो रुपए जगन्नाथ जी के चरणों में सेठ के नाम से चढ़ा दूंगा । जब सेठ पूछेगा तो मैं कहूंगा पैसे चढ़ा दिए। सेठ यह तो नहीं कहेगा 100 रुपए चढ़ाए। सेठ पूछेगा पैसे चढ़ा दिए मैं बोल दूंगा कि, पैसे चढ़ा दिए। झूठ भी नहीं होगा और काम भी हो जाएगा। भक्त ने श्री जगन्नाथ जी के दर्शनों के लिए मंदिर में प्रवेश किया श्री जगन्नाथ जी की छवि को निहारते हुए अपने हृदय में उनको विराजमान कराया। अंत में उसने सेठ के दो रुपए श्री जगन्नाथ जी के चरणो में चढ़ा दिए। और बोला यह दो रुपए सेठ ने भेजे हैं।

उसी रात सेठ के पास स्वप्न में श्री जगन्नाथ जी आए आशीर्वाद दिया और बोले सेठ तुम्हारे 98 रुपए मुझे मिल गए हैं यह कहकर श्री जगन्नाथ जी अंतर्ध्यान हो गए। सेठ जाग गया सोचने लगा मेरा नौकर तौ बड़ा ईमानदार है, पर अचानक उसे क्या जरुरत पड़ गई थी उसने दो रुपए भगवान को कम चढ़ाए ? उसने दो रुपए का क्या खा लिया ? उसे ऐसी क्या जरूरत पड़ी ? ऐसा विचार सेठ करता रहा। काफी दिन बीतने के बाद भक्त वापस आया और सेठ के पास पहुंचा। सेठ ने कहा कि मेरे पैसे जगन्नाथ जी को चढ़ा दिए थे ? भक्त बोला हां मैंने पैसे चढ़ा दिए। सेठ ने कहा पर तुमने 98 रुपए क्यों चढ़ाए दो रुपए किस काम में प्रयोग किए। तब भक्त ने सारी बात बताई की उसने 98 रुपए से संतो को भोजन करा दिया था। और

ठाकुरजी को सिर्फ दो रुपए चढ़ाये थे। सेठ सारी बात समझ गया व बड़ा खुश हुआ तथा भक्त के चरणों में गिर पड़ा और बोला- "आप धन्य हो आपकी वजह से मुझे श्री जगन्नाथ जी के दर्शन यहीं बैठे-बैठे हो गए । सन्तमत विचार- भगवान को आपके धन की कोई आवश्यकता नहीं है। भगवान को वह 98 रुपए स्वीकार है जो जीव मात्र की सेवा में खर्च किए गए और उस दो रुपए का कोई महत्व नहीं जो उनके चरणों में नगद चढ़ाए गए...

इस कहानी का सार ये है कि भगवान को चढ़ावे की जरूरत नही होती जो सच्चे मन से किसी जरूरतमंद की जरूरत को पूरा कर देना भी .....भगवान को भेंट चढ़ाने से भी कहीं ज्यादा अच्छा होता है जी । हम उस परमात्मा को क्या दे सकते हैं..... जिसके दर पर हम ही भिखारी हैं।

शहीदों को समर्पित

दीपिका दीवान
वरि.कार्यालय सहायक (परि.।।।)

अपने शोणित से मां ये अंतिम पत्र तुझे अर्पित है,
मां भारती के चरणों में मां ये शीश समर्पित है।

मां रणभूमि में पुत्र ये तेरा आज खड़ा है,
शत्रु के सीने पर पैर जमा ये खूब लड़ा है।

कहा था एक दिन मां तूने कि पीठ पे गोली मत खाना,
शत्रु दमन से पहले घर वापस मत आ जाना।

सौ शत्रुओं के सीने में मैंने गोली आज उतारी है,
मां तेरे बेटे ने की शत्रु सिंहों की सवारी है।

भारत मां की रक्षा कर तेरे दूध की लाज बचाई है,
मां तेरे बेटे ने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

मातृभूमि की धूल लपेटे तेरा पुत्र शत्रु पर भारी है,
रक्त की होली खेल शत्रु की पूरी सेना मारी है।

वक्षस्थल मेरा छलनी है लहूलुहां मैं लेटा हूं,
गर्व मुझे है मां तुझ पर मैं सिंहनी का बेटा हूं।

मत रोना तू मौत पे मेरी तू शेर की माई है,
मां तेरे बेटे ने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

पिता आज गर्वित होंगे अपने बेटे की गाथा पर,
रक्त तिलक जब देखेंगे वो अपने बेटे के माथे पर।

उनसे कहना मौत पे मेरी आंखें नम न हो पाएं,
स्मृत करके पुत्र की यादें आंसू पलक न ढलकाएं।
अब भी उनके चरणों में हूं, महज शरीर की विदाई है,
मां तेरे बेटे ने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

उससे कहना धैर्य न खोए, है नहीं अभागन वो,
दे सिन्दूर मां भारती को बनी है सदा सुहागन वो।

कहना उससे अश्रुसिंचित कर न आंख भिगोए वो,
अगले जनम में फिर मिलेंगे मेरी बाट संजोए वो।

श्रृंगारों के सावन में मिलेंगे जहां अमराई है,
मां तेरे बेटे ने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

स्मृतियों के पदचाप अनुज मेरे अंतर में अंकित हैं,
स्नेहशिक्त तेरा चेहरा क्या देखूंगा मन शंकित है।

हृदय भले ही बिंधा है मेरा, रुधिर मगर ये तेरा है,
अगले जनम तू होगा सहोदर, पक्का वादा मेरा है।

तुम न रहोगे साथ में मेरे कैसी ये तन्हाई है,
मां से कहना मैंने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

बहिन नहीं तू बेटी मेरी, अब किसको राखी बांधेगी,
भैया-भैया चिल्लाकर कैसे तू अब नाचेगी।

सोचा था कांधे पर डोली रख तेरी विदा कराऊंगा,
माथे तिलक लगा इस सावन राखी बंधवाऊंगा।

बहना तू बिलकुल मत रोना, तू मेरे हृदय समाई है,
मां से कहना मैंने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

पापा-पापा कहकर जो मेरे कांधे चढ़ जाती थी,
प्यारभरी लोरी सुनकर वो गोदी में सो जाती थी।

कल जब तिरंगे में लिपटे उसके पापा आएंगे,
कहना उससे उसको पापा परियों के देश घुमाएंगे।

उसको सदा खुश रखना वो मेरी परछाईं है,
मां तेरे बेटे ने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

मां भारती के भाल पर रक्त तिलक चढ़ाता हूं,
अंतिम प्रणाम अब सबको महाप्रयाण पर जाता हूं।

तेरी कोख से फिर जन्मूंगा ये अंतिम नहीं विदाई है,
मां तेरे बेटे ने अपने वक्षस्थल पर गोली खाई है।

हुनर

रेनू शर्मा
कार्याकारी सहायक (वि एवं प्रशा.)

हर किसी इंसा में एक हुनर छिपा होता है
कोई जानता है तो कोई अनजान होता है
जरुरत है अंदर छुपे हुनर को पहचानने की
सामने लाने की, अपनी पहचान बनाने की।

फिर यही हुनर तुम्हारी ताकत बन जाएँगी
तुम्हारी काबिलियत ओर निखरकर आएगी
हुनर कभी किसी एक का गुलाम नहीं होता
ईश्वर की देन है जोकि हर किसी में है होता।

ये भी हुनर है की इंसा पल में बदल जाता है
सामने कुछ व पीछे कुछ और नज़र आता है
हुनर के दम पर मंज़िल सिर्फ वो लोग पाते है
जो छल, कपट व द्वेष से कोसों दूर हो जाते है।

हुनर के पंखो से ऊंचाई छूने की कोशिश करें
निंदा करने वालो की कभी भी परवाह ना करें
तुम्हारा जूनून ही तुमको ऊंचाई तक ले जाएगा
निंदा करने वाला भी एकदिन बधाई देने आएगा।

ज्ञान का दीपक

वीनू शर्मा
वरि.का.सहायक(पी–।।।)

काशी में गंगा के तट पर एक संत का आश्रम था। एक दिन उनके एक शिष्य ने पूछा, गुरूवर, शिक्षा का निचोड़ क्या है? संत ने मुस्करा कर कहा, 'एक दिन तुम खुद–ब–खुद जान जाओगे।' बात आई और गई। कुछ समय बाद एक रात संत ने उस शिष्य से कहा, वत्स, इस पुस्तक को मेरे कमरे में तख्त पर रख दो। शिष्य पुस्तक लेकर कमरे में गया लेकिन तत्काल लौट आया। वह डर से कांप रहा था। संत ने पूछा, 'क्या हुआ? इतना डरे हुए क्यों हो?' शिष्य ने कहा, 'गुरूवर, कमरे में सांप है।

संत ने कहा, 'यह तुम्हारा भ्रम होगा। कमरे में सांप कहां से आएगा। तुम फिर जाओ और किसी मंत्र का जाप करना। सांप होगा तो भाग जाएगा।' शिष्य दोबारा कमरे में गया। उसे मंत्र का जाप भी किया लेकिन सांप उसी स्थान पर था। वह डर कर फिर बाहर आ गया और संत से बोला, 'सांप वहां से जा नहीं रहा।' संत ने कहा, 'इस बार दीपक लेकर जाओ। सांप होगा तो दीपक के प्रकाश से भाग जाएगा।

शिष्य इस बार दीपक लेकर गया तो देखा कि वहां सांप नहीं है। सांप की जगह एक रस्सी लटकी हुई थी। अंधकार के कारण उसे रस्सी का वह टुकड़ा सांप नजर आ रहा था। बाहर आकर शिष्य ने कहा, गुरूवर, वहां सापं नहीं रस्सी का टुकड़ है। अंधेरे में मैंने उसे सांप समझ लिया था। संत ने कहा, वत्स, इसी को भ्रम कहते हैं। संसार गहन भ्रम जाल में जकड़ा हुआ है। ज्ञान के प्रकाश से ही इस भ्रम जाल को मिटाया जा सकता है। लेकिन अज्ञानता के कारण हम बहुत सारे भ्रम जाल पाल लेते हैं और आंतरिक दीपक के अभाव में उसे दूर नहीं कर पाते। यह आंतरिक दीपक का प्रकाश संतों और ज्ञानियों के सत्संग से मिलता है। जब तक आंतरिक दीपक का प्रकाश प्रज्वलित नहीं होगा, लोग भ्रमजाल से मुक्ति नहीं पा सकते।

अनजानी सलाह

गुलशन
निजी सहायक (वि. एव प्रशा.)

एक दिन घनघोर वर्षा हो रही थी, मेघों की भयानक गर्जना ने उस शाम के वातावरण को और भयावह बना दिया था। एक अधेड़ दम्पत्ति झोंपड़ी में बैठे दुख–सुख की बातें कर रहे थे।

अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया और आवाज दी, अन्दर कोई है क्या? किसान ने दरवाजा खोलकर देखा तो सामने आत्मविश्वास से भरा 20–21 वर्ष का कोई युवक खड़ा था। वर्षा में उसके कपड़े पूरी तरह गीले हो चुके थे। वह बहुत थका हुआ लग रहा था। उसकी वेशभूषा और लटकती तलवार से लगता था कि वह सिपाही है। किसान ने उससे पूछा क्या बात है भाई? युवक बोला मैं राही हूं, मार्ग भटक गया हूँ और वर्षा में पूरी तरह भीग चुका हूँ। मैं और मेरा घोड़ा बुरी तरह थक गए हैं, आज की रात यहां बिताने के लिए जगह चाहिए।

नवयुवक को आसरा मिल गया। किसान की पत्नी ने उसे बदलने के लिए कपड़े दिए। भीगे वस्त्रों को आग के पास टांग दिया जिससे वे जल्दी सूख जाएं। किसान ने घोड़े को आंगन में बांध दिया और खाने के लिए चारा दे दिया। किसान की पत्नी ने युवक से पूछा 'भूख लगी होगी' तो कुछ खाना खा लो।

युवक ने कहा नहीं–नहीं मैं खाना नहीं खाऊँगा, मैं सोना चाहता हूँ। किसान बोला ये नहीं हो सकता। हम गरीब जरूर हैं लेकिन घर आए हुए अतिथि को भूखा थोड़े सोने देंगे। जो कुछ रूखा सूखा है हम भी खाएंगे और आप भी खा लो। युवक इस प्रेम भरे आग्रह को टाल न सका किसान की पत्नी ने युवक तथा किसान के आगे केले के पत्तल लगा दिए और पत्ते पर चावल परोसा और वह कढ़ी लाने गई और चावल पर कढ़ी परोसी तो पत्तल पर कढ़ी पत्तल पर बहने लगी। युवक उसे एक ओर से रोकता तो वह दूसरी ओर से बहने लगती। युवक की समझ में नहीं आ रहा था कि वह कढ़ी को रोकने के लिए क्या उपाय करे?

उस युवक की परेशानी देखकर किसान की पत्नी को हंसी आ गई और वह बोली 'तुम तो शिवाजी की तरह बूद्धू हो' फिर उसने उसे समझाते हुए कहा 'चावल में कढ़ी लेने से पहले गढ़ा कर लेना चाहिए नही तो रूक नहीं सकती, तुम्हें इतना भी नहीं मालूम। युवक बोला मुझे तो कढ़ी चावल खाना नहीं आता। इसलिए मैं तो बुदधू हूं ही लेकिन यह शिवाजी कौन है? उसे आप बुद्धू क्यों कहती हो? किसान की पत्नी बोली 'शिवाजी महाराष्ट्र पर अपना राज्य कायम करना चाहते हैं इसलिए सुल्तान से लड़ता है, वह बहादुर तो बहुत है, लेकिन उसकी लड़ाई का तरीका गलत है। वह कैसे? युवक ने पूछा। वह बोली, शिवाजी गांव पर कब्जा तो कर लेता है, परन्तु किलों पर अधिकार नहीं करता है। सुल्तान के सैनिक मौका मिलते ही किले से निकलते है और मारधाड़ करते हैं, फिर शिवाजी को पीछे हटना पड़ता है, वह यह नहीं समझता कि स्वराज्य कायम करना है तो पहले किलों पर कब्जा करना चाहिए। युवक बोला किलों पर कब्जा करना आसान नहीं है और इसमें समय भी लगता है।

किसान की पत्नी बोली ठीक है परन्तु किलों पर कब्जा करना आवश्यक है, किलों पर कब्जा किए बिना स्वराज्य कायम नहीं किया जा सकता, जैसे चावल में गड्ढ़ा किए बगैर कढ़ी बह जाती है उसी प्रकार किलों के बिना प्रदेश भी हाथ से निकल जायेगा जिसके पास किलें होंगे, उसी का महाराष्ट्र पर शासन होगा। युवक को स्त्री की बात समझ में आ गई। वह सुबह उठकर चला गया।

इस घटना को कई वर्ष बीत गए किसान दम्पती अब वृद्ध हो चुकी थी। महाराष्ट्र में शिवाजी का शासन कायम हो गया था। उनके राज्यभिषेक की तैयारियां हो रही थी । एक दिन बूढ़ा किसान अपनी झोंपड़ी के बाहर बैठा था उसी समय बहुत से घुड़सवार वहां आकर रूके और किसान से कुछ पूछा, घुड़सवारों के नेता ने कहा 'शिवाजी ने आप दोनों को आमंत्रित किया है।

यह सुनते ही किसान घबरा गया और बोला – क्या बात है मुझसे कोई अपराध हुआ है , जो शिवाजी ने हमें बुलाया है।

सरदार ने कहा 'महाराज ने हमें तो केवल इतना ही बताया है कि आपके कढ़ी–चावल के सबक के कारण ही स्वराज्य कायम हो सका है। अतः महाराज की इच्छा है कि आप उनके राज्यभिषेक में अवश्य पधारें।

इस प्रकार एक किसान दंपति की अनजानी सलाह से शिवाजी महाराज को नई योजना का सूत्र दे दिया जिसे अपनाकर उन्होंने मराठा साम्राज्य की स्थापना की।

ईश्वर सब जगह विद्यमान है

यतिन्द्र कुमार वत्स
परामर्शदाता

एक बार एक युवक अपनी बेरोजगारी से बहुत दुखी होकर भगवान को कोस रहा था। तभी पास में खड़े एक चोर ने उसकी बात सुनी और उसकी दशा देखकर उस चोर के अंदर सहानुभूति जागी। तब उसे चोर ने उस युवक से कहा कि तुम मेरे साथ चलो। हम लोग मिलकर चोरी करेंगे और बहुत सारा धन कमाएंगे। वह बेरोजगार युवक तैयार हो गया और उस चोर के साथ चल पड़ा। किन्तु उसे चोरी करनी नहीं आती थी। उसने यह बात अपने चोर साथी से कही। उसके साथी चोर ने कहा कि तुम इसकी चिंता मत करो मैं तुम्हें चोरी करना सिखा दूंगा। फिर उस रात दोनों ने मिलकर एक किसान के पके हुए खेत को काटने गए। वह खेत जंगल से बहुत दूर था जिस कारण से उस खेत की रखवाली रात को कर पाना बड़ा मुश्किल था तो भी चोर ने अपने साथी को खेत की मेंढ पर खड़ा कर दिया और कहा कि तुम खेत में निगरानी करते रहना और ध्यान रखना कि अगर खेत का मालिक आता दिखाई दे तो मुझे सूचित कर देना। उसके बाद वह चोर खेत काटने लगा। बेरोजगार युवक खेत की मेंढ़ पर खड़ा होकर पहरेदारी करने लगा। थोड़ी ही देर में उस युवक ने आवाज लगाई कि भाई जल्दी भागो खेत का मालिक पास आता दिखाई दे रहा है। मैं भी भागता हूं। तभी चोर खेत को बीच में काटना छोड़कर भागने लगा। कुछ दूर पहुंचकर दोनों एक स्थान पर खड़े हो गए और चोर ने अपने साथी से पूछा कि खेत का मालिक कहां से आ रहा था। चोर ने फिर पूछा कि खेत के मालिक ने हमें चोरी करते तो नहीं देखा पर उस युवक ने कहा कि ईश्वर सबका मालिक है। इस संसार में जो कुछ भी है सब कुछ उसी ईश्वर का दिया हुआ है। वह सब जगह विद्यमान है और हम उनसे कुछ भी नहीं छुपा सकते हैं। वह सब देख रहा है। मेरी आत्मा ने मुझसे कहा कि ईश्वर इस खेत में भी मौजूद हैं और वह हमें चोरी करते देख रहे हैं। ऐसे मैं मेरे मन की दशा ने कहा कि यहां से भाग निकलना ही उचित होगा इसलिए मैंने तुम्हें यहां से भागने को कहा इस कहानी । इस कहानी से हमें यह सिख मिलती है कि अंधेरे या उजाले में किया हर गलत कार्य ईश्वर से छिपता नहीं है और हमें सदैव ही अच्छे कार्य करने चाहिए जिससे कि भविष्य में पछताना ना पड़े। चोर की आंखे खुल गई और उसने चोरी करना छोड़ दिया और सच्चाई के रास्ते पर चल पड़ा।

जनसंख्या वृद्धि

लक्ष्मीकान्ता
निजी सहायक (पी–।।)

जनसंख्या वृद्धि एक चिंता का विषय है क्योंकि यह जितनी तेजी से बढ़ रही है उसके लिए मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना नामुमकिन सा हो रहा है। जब तक देश का प्रत्येक नागरिक जनसंख्या नियंत्रण के महत्व को नहीं समझेगा तब तक जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण पाना बहुत जटिल समस्या है। आज प्रत्येक नागरिक को समझने की जरूरत है कि अगर वह जनसंख्या पर नियंत्रण करते हैं तो उन्हें स्वच्छ पर्यावरण वायु, जल, स्वास्थ्य, भोजन मिलेगा जो कि उनके परिवार, समाज एवं परिवार, देश के लिए और सबसे अधिक हमारी पृथ्वी का वातावरण भी संतुलित रहेगा । जनसंख्या वृद्धि दर विकासशील देशों की एक अहम समस्या है इस समस्या से हमारा भारत देश भी जूझ रहा है। सबसे अधिक जनसंख्या हमारे पड़ोसी देश चीन में है उसके बाद भारत दूसरे स्थान पर आता है। जनसंख्या वृद्धि के बहुत से कारण है जैसे अशिक्षित लोग, बाल विवाह, पुत्र मोह, रूढिवादी सोच, मृत्यु दर में कमी, इत्यादि प्रमुख कारण है जिसके कारण निरंतर जनसंख्या वृद्धि हो रही है। अधिक संतान होनेके कारण ज्यादातर लोग नरकीय जीवन यापन करते हैं। जनसंख्या वृद्धि का सबसे अधिक प्रभाव हमारे पर्यावरण पर पड़ता है जो कि हमारी पृथ्वी के लिए बहुत हानिकारक है। जनसंख्या वृद्धि के कारण हमें मूलभूत सविधाएं जैसे स्वच्छ जल, वायु, भोजन, चिकित्सा सुविधा भी नहीं मिल पाती है। जनसंख्या वृद्धि के कारण ज्यादातर लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन निर्वाह कर रहे हैं इसके कारण देश के आर्थिक विकास की दर भी धीमी पड़ रही है। इसलिए भविष्य में स्वच्छ जल, हवा, भोजन नहीं मिल पाएगा और लोगों में हिंसा फैल जाएगी इसका परिणाम यह होगा कि पृथ्वी पर से जीवन विलुप्त हो जाएगा । जनसंख्या वृद्धि एक धीमे जहर की तरह धीरे-धीरे हमारे रहने के स्थान पृथ्वी को नष्ट कर रही है नहीं तो पृथ्वी जंग का मैदान बन जाएगी।

जनसंख्या वृद्धि के कारण-

1. अशिक्षा - शिक्षा की कमी के कारण लोग बच्चों को जन्म देते रहते है जिससे उनकी परवरिश और भविष्य के बारे में नही सोचते है जिसके कारण संसाधनों की असुविधा होती है।
2. सामाजिक दबाव - कई बार विवाह होने के पश्चात शिक्षित लोग बच्चे का जल्द ही जन्म नहीं करना चाहते लेकिन सामाजिक आलोचनाओं के कारण उन्हें जल्दी बच्चे का जन्म देना पड़ता है जो कि जनसंख्या वृद्धि का कारण बनता है।
3. मृत्यु दर में कमी - हमारी विज्ञान और चिकित्सा पद्धति ने इतनी उन्नति कर ली है कि अब बड़ी बड़ी बीमारियों से भी बचा जा सकता है इसलिए लोग अधिक समय तक जीवित रहते है जो कि जनसंख्या वृद्धि में मुख्य भागीदारी निभाता है।
4. रूढिवादी सोच -अक्सर गांव के ज्यादातर लोग अपनी रूढिवादी सोच के कारण बच्चों को जन्म देते हैं ताकि आय का साधन बढ़ सकें।
5. गरीबी एंव कुपोषण - निरंतर जनसंख्या वृद्धि के कारण एक व्यक्ति अपने पूरे परिवार का भरण पोषण नहीं कर पाता है क्योंकि उसकी संतान अधिक होती हैं जिसके कारण उसका पूरा जीवन गरीबी में व्यतीत होता है। एक व्यक्ति के अधिक संतान होने के कारण वे उन्हें पौष्टिक आहार उपलब्ध नहीं करा पाता है जिसके कारण हमें गरीब तबके के लोगों में कुपोषण जैसी समस्याएं देखने को मिलती है।
6. प्रदूषित पर्यावरण - अगर किसी देश में अधिक जनसंख्या होगी तो वहां प्रत्येक वस्तु का अत्याधिक इस्तेमाल होगा जिसके कारण पूरा पर्यावरण प्रदूषित हो जाता है, जनसंख्या वृद्धि के कारण अधिक

कार्बन डाइऑक्साइड, दूषित जल और रहने के लिए स्थान की आवश्यकता के कारण जंगलों की कटाई होती है जिससे जंगल भी खत्म होते हैं साथ ही वहां के प्राणी भी खत्म हो जाते हैं और वायु प्रदूषण जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।

7. मूलभूत सुविधाओं की कमी - किसी भी देश के नागरिक को अपना जीवन व्यतीत करने के लिए मूलभूत सुविधांए मिलनी जरूरी है जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, जल इत्यादि लेकिन यह सभी सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं और जनसंख्या अधिक होगी तो इन सुविधाओं का मिलना मुश्किल होगा ।

8. देश का आर्थिक विकास रूकना - जिस देश की जनसंख्या अधिक होगी उस देश का आर्थिक विकास भी धीमा पड़ जाएगा क्योंकि सरकार जब भी विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएं बनाती है तो जनसंख्या को ध्यान में रखकर बनाती है लेकिन 5 वर्ष में जनसंख्या इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उस योजना का प्रभाव देखने को नहीं मिलता है और देश में प्रत्येक वस्तु की खपत भी अधिक होती है जिसके कारण निर्यात में कमी आती है और आर्थिक विकास धीमा होता है।

9. पौष्टिक आहार की कमी - बढ़ती हुई जनसंख्या की आहार संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए किसानों द्वारा खेतों में अब यूरिया जैसी खादों का उपयोग किया जाता है क्योंकि दिन प्रतिदिन जनसंख्या तो बढ़ रही है लेकिन उनकी भोजन की व्यवस्था करने के लिए उपजाऊ जमीन सीमित मात्रा में उपलब्ध है।

10. महंगाई बढ़ना - अगर किसी वस्तु की कमी होगी तो उसका मूल्य बढ़ना स्वाभाविक है इसलिए जैसे-जैसे जनसंख्या वृद्धि होती है वैसे-वैसे महंगाई बहुत तेजी से बढ़ रही है।

जनसंख्या को नियंत्रित करने के उपाय -

क. शिक्षा - अगर हमें जनसंख्या को नियंत्रित करना है तो सबसे पहले हमें शिक्षा का प्रचार प्रसार करना होगा क्योंकि शिक्षा से ही लोगों की आखों पर पड़ा अधंकार का पर्दा उठेगा और उन्हें ज्ञात होगा कि अधिक संतान के कारण उनके भविष्य के साथ-साथ उनकी संतान का भविष्य भी खराब हो जाता है इसलिए प्रत्येक गांव तक शिक्षा का पहुंचना बहुत आवश्यक है।

ख जुर्माना या दंड - सरकार को जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए एक नियमित संख्या से ज्यादा संतान पैदा करने पर जुर्माना लगा देना चाहिंए या फिर मुफ्त में मिलने वाली सरकारी सुविधाओं से वंचित कर देना चाहिए जिससे जनसंख्या को नियंत्रित करने में सरकार का सहयोग करें। दत्तक ग्रहण को बढ़ावा देना एवं परिवार नियोजन के बारे में जानकारी, न्यूनतम विवाह योग्य आयु आदि प्रोग्राम को बढ़ावा देना चाहिए।

जनसंख्या वृद्धि एक धीमें जहर के समान है जोकि धीरे-धीरे हमारे रहने के स्थान पृथ्वी को नष्ट कर रही है। हमें स्वयं आगे बढ़कर जनसंख्या को नियंत्रित करना होगा नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब लोग एक दूसरे को मारने पर उतारू हो जाएंगे और पूरी पृथ्वी जंग का मैदान बन जाएगी। जनसंख्या वृद्धि पर रोक हमारी मानव सभ्यता और अन्य वन्यजीवों के लिए आवश्यक है। इसलिए आज ही अपने आसपास के क्षेत्र में लोगों को इसके बारे में जानकारी दें।

प्राची गुसांई
कार्यकारी सहायक (पी–।।।)

जो भी होता है अच्छे के लिए होता है

एक मंदिर था, उसमें सब लोग पगार पर काम करते थे। आरती वाला, पूजा कराने वाला आदमी, घंटा बजाने वाला भी पगार पर था... घंटा बजाने वाला आदमी आरती के समय भाव के साथ इतना मशगुल हो जाता था कि होश में ही नहीं रहता था। घंटा बजाने वाला व्यक्ति भक्ति भाव से खुद का काम करता था। मंदिर में आने वाले सभी व्यक्ति भगवान के साथ साथ घंटा बजाने वाले व्यक्ति के भाव के भी दर्शन करते थे,उसकी भी वाह वाह होती थी...एक दिन मंदिर का ट्रस्ट बदल गया,और नए ट्रस्टी ने ऐसा आदेश जारी किया कि अपने मंदिर में काम करते सब लोग पढ़ेलिखे होना जरूरी - लिखे नहीं है उन्हें निकाल दिया जाएगा।-है। जो पढ़े उस घंटा बजाने वाले भाई को ट्रस्टी ने कहा कि 'तुम्हारे आज तक का पगार ले लो अब से तुम नौकरी पर मत आना। उस घंटा बजाने वाले व्यक्ति ने कहा, 'साहेब भले मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं पर इस कार्य मैं मेरा भाव भगवान से जुड़ा हुआ है देखो...

ट्रस्टी ने कहा, 'सुन लो, तुम पढ़ेलिखे नहीं हो-, इसलिए तुम्हें रख नहीं रख पाएंगे...

दूसरे दिन मंदिर में नये लोगों को रख लिया परन्तु आरती में आए लोगों को अब पहले...जैसा मजा नहीं आता। घंटा बजाने वाले व्यक्ति की सभी को कमी महसूस होती थी। कुछ लोग मिलकर घंटा बजाने वाले व्यक्ति के घर गए, और विनती की तुम मंदिर आया करो। उस भाई ने जवाब दिया, 'मैं आऊंगा तो ट्रस्टी को लगेगा नौकरी लेने के लिए आया है इसलिए आ नहीं सकता हूं...लोगों ने एक उपाय बताया कि 'मंदिर के बराबर सामने आपके लिए एक दुकान खोल देते हैं, वहां आपको बैठना है और आरती के समय बजाने आ जाना, फिर कोई नहीं कहेगा तुमको नौकरी की जरूरत है..' उस भाई ने मंदिर के सामने दुकान शुरू की, वहइतनी चली कि एक दुकान से सात दुकान और सात दुकान से एक फैक्ट्री खोली। अब वो आदमी मर्सिडीज से घंटा बजाने आता था । समय बीतता गया, यह बात पुरानी हो गई। मंदिर का ट्रस्टी फिर बदल गया। नए ट्रस्ट को नया मंदिर बनाने के लिए दान की जरूरत थी। मन्दिर के नए ट्रस्टी को विचार आया सबसे पहले उस फैक्ट्री के मालिक से बात करके देखते हैं.. ट्रस्टी मालिक के पास गया सात लाख का खर्चा है। फैक्ट्री मालिक को बताया।

फैक्ट्री के मालिक ने कोई सवाल किए बिना एक खाली चेक ट्रस्टी के हाथ में दे दिया। और कहा चैक भर लो ट्रस्टी ने चैक भरकर उस फैक्ट्री मालिक को वापस दिया। फैक्ट्री मालिक ने चैक को देखा और उस ट्रस्टी को दे दिया। ट्रस्टी ने चैक हाथ लिया और कहा सिग्नेचर तो बाकी है। मालिक ने कहा मुझे सिग्नेचर करना नहीं आता है,लाओ अंगूठा लगा देता हूं, ..वही चलेगा ...।

यह सुनकर ट्रस्टी चौंक गया और कहा, "साहब तुमने अनपढ़ होकर भी इतनी तरक्की की, यदि पढ़े"!!!... लिखे होते तो कहां होते- तो वह सेठ हंसते हुए बोला,
'भाई, मैं पढ़ालिखा होता तो बस मंदिर में घंटा बजाते होता-'

सारांश:
कार्य कोई भी हो, परिस्थिति कैसी भी हो, तुम्हारी स्थिति, तुम्हारी भावनाओं पर निर्भर करती है। भावनाएं शुद्ध होंगी तो ईश्वर और सुंदर भविष्य पक्का तुम्हारे साथ होगा। जो काम करो पूरे 100 प्रतिशत मोहब्बत और मेहनत के साथ करो। विपरीत स्थिति में किसी को दोष मत दो, हो सकता है उसमें कुछ अच्छा छुपा हो...

भारत की राष्ट्र भाषा हिंदी का महत्व

मोहम्मद जावेद
निजी सहायक (पी– I)

हिंदी दिवस के पीछे इतिहास:

भारत के राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने सन 1918 को हिंदी साहित्य सम्मलेन में हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने को कहा था गाँधी ने हिंदी के विकास और बुनियादी ढांचे को पुरे देश में प्रयोग में लाने को कहा था.

हिंदी दिवस का इतिहास:

आजादी के बाद भारत में 14 सितम्बर1949 को काफी विचार-विमर्श के बाद यह फैसला लिया गया कि हिंदी ही भारतवर्ष की आधिकारिक राजभाषा होगी । भारतीय सविंधान की धारा 343 (1) में कहा गया हैं "' **संघ की राज भाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये प्रयोग में होने वाले अंक का रूप अन्तराष्ट्रीय होगा** "'। इसी दिन के सम्मान में प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

आज के समय में हिंदी की स्थिति

भारत एक कृषि प्रधान देश है यह सबको मालूम होगा, भारत में कृषि का अंशदान 20% ही रह गया हैं और इसका असर भारत की राष्ट्र भाषा में पड़ने लगा हैं .भारत में अंग्रेजी के अलावा दुसरे भाषा की पढाई कई लोगो को मुश्किल लगती है .आज भारत में कई ऐसे राज्य हैं जहाँ हिंदी ना के बराबर बोली जाती हैं .आज भी भारत के हर राज्य अपनी राज्य की भाषा को जायदा महत्व देते हैं जैसे -गुजरात में गुजराती, महाराष्ट्र में मराठी, पंजाब में भाषा पंजाबी, नागालैंड में फुल english, सिक्किम में अपनी भाषा बोलते है. आज भी भारत में हिंदी राज्य बहुत ही कम हैं जहाँ हिंदी को बढ़ावा दिया जाता हैं जैसे – हिंदी राज्य मध्य प्रदेश, दिल्ली, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि कुछ गिने चुने राज्य ही हिंदी भाषा राज्य हैं .देश के अन्य राज्यों में हिंदी ना के बराबर बोली जाती हैं जिसका मतलब है हिंदी भाषा खतरे हैं और हिंदी का मजाक उड़ाया जाता हैं। भारत के आज की नव पीढ़ी थोड़ा अंग्रेजी और हिंदी या फिर कुछ लोकल भाषा के साथ मिलकर बोलती हैं .जिससे हिंदी की पहचान कम होती नजर आ रही हैं ये तो रहा समाज का हाल अब बात करे हमारे देश के नेताओं की तो वो देश की संसद और शपथ ग्रहण में भी हिंदी को ना के बराबर बोलते हैं या तो अंग्रेजी या फिर अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में बोलते हैं जो कि हिंदी का एक अपमान हैं.

हिंदी भाषा के लिए कार्यक्रम:

भारत में हर साल 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में कार्यक्रम होते हैं .इस दिन स्कूल सरकारी प्रतिष्ठान और अन्य जगहों पर हिंदी दिवस के रूप में कार्यक्रम होते हैं .स्कूल और कॉलेजों में निबंध लेखन, वाद – विवाद और हिंदी विचार-विमर्श किया जाता हैं .इस दिन पूरा देश हिंदी के रूप में रंगा होता हैं.। सरकार इस दिन पुरस्कार की भी व्यवस्था रखती हैं । सरकार ऐसे व्यक्ति को यह पुरस्कार देती है जिसने जन-जन तक हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिये अपना बहुमूल्य समय देश की राष्ट्र भाषा के लिये लगा दिया हो। सरकार इस दिन 1 लाख रुपये का चैक और कुछ प्रतीक भी देती हैं लेकिन 14 सितम्बर को तो हिंदी – हिंदी होती है और अगले ही दिन हिंदी को भूल जाते हैं ।

चिंताजनक स्थिति:

हिंदी भाषा पुरे विश्व में सबसे ज्यादा बोलने में चौथे नम्बर पर आती हैं लेकिन उसे अच्छी तरह से समझना, पढ़ना तथा लिखना यह बहुत कम संख्यां में लोग जानते है .आज के समय में हिंदी भाषा के ऊपर अंगेर्जी भाषा के शब्दों का ज्यादा असर पड़ा हैं .आज के समय में अंग्रेजी भाषा ने अपनी जड़े ज्यादा घेर ली हैं जिससे हिंदी भाषा के भविष्य में खो जाने की चिंतायें बढ़ गयी हैं.

जो लोग इस हिंदी भाषा में ज्ञान रखते हैं उन्हें हिंदी के प्रति अपने जिम्मेदारी का बोध करवाने के लिये इस दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता हैं जिससे वे सभी अपने कर्तव्यों का सही पालन करके हिंदी भाषा के गिरते हुए स्तर को बचा सकें .लेकिन समाज और सरकार इसके प्रति उदासीन दिखती हैं हिन्दी भाषा को आज भी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा भी नहीं बनाया जा सका हैं। हालात ऐसे आ गए हैं कि हिंदी भाषा को हिंदी दिवस के मौके पर सोशल मीडिया पर आज भी " **हिंदी में बोलो** " जैसे करके शब्दों का प्रयोग करना पड़ रहा हैं .कुछ पत्रकारों ने मीडिया से कहा हैं कि कम से कम हिंदी दिवस के मौके पर तो हिंदी में बात-चीत करे जिससे हिंदी राष्ट्र भाषा को कुछ सम्मान मिल सकें.

हिंदी की उपेक्षा से उबरने के उपाय:

अगर हिंदी का विकास करना हैं तो लोगो को दूसरी भाषाओं को छोड़ कर अपनी देश की जन्म भाषा को स्वीकार करना पढ़ेगा। इस दिन सभी सरकारी और गैर सरकारी कार्यालय में अंग्रेजी के बदले हिंदी भाषा को उपयोग करने की सलाह दी जाती है। आज भी हमारे समाज में कई लोग हिंदी के बदले विदेशी भाषाओं को ज्यादा तबज्जो देते हैं और इससे हिंदी भाषा खतरे के निशान के ऊपर जाता नजर आ रहा हैं .यहाँ तक की उत्तर प्रदेश के वाराणसी में हिंदी भाषा की संस्था में भी हिंदी भाषा खतरे में हैं। हमें हिंदी दिवस पर प्रण करना पडेगा कि अपनी सभी कार्यो और बोलचाल में हिंदी का ज्यादा प्रयोग करे और दूसरो को भी हिंदी का ज्ञान बताएं। आज कल संचार का युग हैं इसमें सोशल मीडिया जैसे – Facebook, Whatsaapsaap, Twitter और अन्य मीडिया में हिंदी के कई विकल्प रखे गए हैं और साथ ही हिंदी भाषा के शब्दकोशइंटरनेट पर उपलब्ध हैं। सभी को एकजुट होकर हिंदी के विकास को एक नये सिरे से शिखर तक ले जाना होगा, हिंदी भाषा के खोते और गिरते हुए स्तर को जिन्दा रखने में ये एक आखिरी हथियार हैं जिससे देश की राष्ट्र भाषा को कुछ सम्मान मिल सके।

दोस्तों ! हिंदी हमारे देश की राष्ट्र भाषा हैं और हमें गर्व होना चाहिए कि हम हिंदी भाषी हैं.। हमें देश की राष्ट्र भाषा का सम्मान करना चाहिए। हमारे देश में सभी धर्मों के लोग रहते है उनके खान-पान, रहन-सहन और वेश-भूषा अलग-अलग हैं पर एक हिंदी ही हैं जो सभी धर्मों के लोगो को एकता में जोड़ती है। .हिंदी भाषा हमारे देश की धरोहर हैं और जिस तरह हम अपने तिरंगे को सम्मान देते हैं उसी प्रकार अपने देश की राष्ट्र भाषा को भी सम्मान देना चाहिए। देश के लेखको ने हिंदी के ऊपर कई गीत और रचनाएँ लिखी है जिनमे से एक हैं ' **हिंदी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्तान हमारा** " ये शब्द देश की शान में लिखे गए हैं और हमें गर्व महसूस कराते हैं।

नारी

मुस्कान चौहान
एमटीएस

कोमल है तू कमजोर नहीं
स्त्री है तू सती नहीं
कभी दुर्गा कभी काली,
शक्ति का नाम है नारी।
जिसका जीवन ही है परीक्षा,
इस धरती की है वही रचेयता।
बचपन से उसे है बेड़ियों में रहना,
ख्वाहिशों से है समझौता करना।
जिसके जीवन पर है कई छंद,
खुद को हार जीतती सबका मन।
अंत में बस यही है कहना,
नारी है हर घर का गहना।

योग से रहे निरोग

रोहित कुमार
निजी सहायक (तकनीकी)

किसी ने सच ही कहा है कि जान है तो जहान है। आजकल के इस भाग दौड़ में तनावपूर्ण वातावरण में हर व्यक्ति के लिए यह जरूरी हो गया है कि वह व्यायाम या योग के द्वारा अपने शरीर को तंदुरूस्त रखे। यह बात अब अंर्तराष्ट्रीय रूप से स्वीकृत हा चुकी है कि भारतीय योग या योग मारव शरीर को स्वस्थ रखने में कारागर है। योग सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य की बात ही नहीं करता है बल्कि वह मानसिक स्वास्थ्य को भी दुरूस्त रखने पर भी उतना ही बल देता है। सामान्य तौर पर माना जाता है कि स्वस्थ मस्तिष्क में ही स्वस्थ्य विचार आते हैं और अगर वैज्ञानिक ढंग से भी देखा जाए तो अगर हम उत्तम विचारों को उत्त शब्दों को रोज दौहराते हैं तो कोई कारण नहीं कि उसका परिणाम सामने न आये। हम योग के इतिहास की बात करें तो भारत में पूर्व–वैदिक काल से योग की शुरूआत मानी जाती है। योग भारत की धरोहर है और ये हजारों साल से भारतीयों की जीवन शैली का हिससा रहा है दुनिया भर के अनगिनत लोगों ने योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाया है और इसका प्रचार प्रसार किया है जिससे इसकी महत्ता आप ही प्रमाणित हो जाती है। इसी क्रम में अगर हम गहराई में जाते हैं तो संसार की प्रथम पुस्कत ऋग्वेद में कई स्थानों पर यौगिक क्रियाओं के विषय में उल्लेख मिलता है। कालान्तर में योगीराज कृष्ण भगवान, महावीर और महात्मा बुद्ध ने इसे अपनी तरह से विस्तार किया। वर्तमान समय के पतंजली योगपीठ के माध्यम से बाबा रामदेव ने इसे जन–जन तक पहुंचाने का काम किया है तो दूसरी तमाम संस्थाएं और योग टीचर अपने–अपने स्तर पर सक्रिय हुए हैं।

आज अधिकांश बड़ी– बड़ी कंपनियां अपने कर्मचारियों को तनावमुक्त रखने के लिए योग अध्यापक नियुक्त कर रही है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता आने के कारण करोड़ों व्यक्ति योग का सहारा ले रहे हैं। योग ने मोटापा, बीपी, शुगर आदि को नियन्त्रण पर रखा है। तनाव में पड़े सभी व्यक्ति को इस बीमारी से मुक्त कर दिया है। अलग–अलग तरह के विचारक ओशो ने भी योग के महन्त का वर्णन किया और कहा है कि योग धर्म, आस्था ओर अंधविश्वास से परे एक सीधा प्रयोगिक विज्ञान है। योग जीवन जीने की कला है और एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। योग के कई आसान क्रियाएं लोगों को रोगों से मुक्ति दिलाने में सक्षम साबित हो चुकी है। कई जगहों पर जहां हमारा मेडिकल साइंस फेल हो चुका है वहां भी योग कारगर साबित हो रहा है। योग का प्रयोग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लोगों से होता रहा है। आधुनिक चिकित्सा शोधों ने ये साफ तौर पर साबित कर दिया है कि योग शारीरिक और मानकिस रूप से मानवजाती के लिए

वरदान है। क्योंकि विभिनन आसन विभिन्न रोगों से लाभदायक है। उदाहरण के लिए शवासन, रक्तदाव, (ब्लडप्रेशर) को नियंत्रित करता है। इसी प्रकार कपालभाती, प्राणायाम स्वास्थ्य जीवन के लिए संजीविनी के समान है इसे तमाम आसन है जिनकों करने से बिना दवाईयों के स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है।

मानव स्वास्थ्य और उसके जीवन में योग के महत्व को देखने के लिए प्रत्येक वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस दुनिया में पहली बार 21 जून 2015 को मनाया गय था। इस बार हमारे कार्यालय राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी में भी योग दिवस पर इसका पूर्ण ज्ञान दिया गया है। हमारे कार्यालय में योग अध्यापक श्री यादव जी ने हम सबको योग से संबंधित जानकारी प्रदान की। कई ऐसे आसन सिखाए जैसे प्राणायाम, वज्रासन, भुजंगासन के साथ साथ योग का भी अभ्यास करवाया और लोम मिलोम के बारे पूर्ण जानकारी दी।

वर्तमान युग में भारत के साथ ही सम्पूर्ण विश्व के लोगों में योग को लेकर जिज्ञासा बढ़ी है और श्वि योग दिवस का उद्धेश्य ही समस्त विश्व में योग से होने वाले लाभों के प्रति लोगों को जागरूक करना है। आज के प्रदूषत वातावरण में योग का महत्व भी बढ़ जाता है क्योंकि योग एक ऐसी औषधि है जिसका कोई साईड इफेक्ट नहीं होता। वास्तव में योग का प्रयोग भारत में हजारों वर्ष से शारीरिक , मानसिक और आध्यात्मिक लाभों के लिए हेाता है।

विविध परंपरा

भवानी मिश्रा
एमटीएस

नगर निगम में नौकरी के दौरान भगतराम बिना कुछ खाए पिये फाइल आगे नहीं सरकाते। रिटायरमेंट के बाद ज बवह अपने मकान का नक्सा पास करवाने नगर निगम के दफ्तर पहुंचे तो उनको क्या–क्या पापड़ बेलने पड़े। रिटायरमेंट के बाद अब आज 6 माह बाद ऑफिस आये थे। उनके सिखाए कर्मचारी अपनी–अपनी जगह पर थे। इसलिए सभी ने उनका स्वागत किया। उन्होंने सीट और काम का जायजा लिया और फिर घर आकर निश्चित हो गए कि कभी उनका कोई काम नगर निगम का होगा तो उसमें कोई दिक्कत नहीं आएगी।

एक दिन उनकी पत्नी ने कहा कि अब जल्द रामदीन (उनका बेटा) की शादी होने वाली है तो उसके लिए ऊपर मकान बनवा दीजिए। भगत राम ने एक लंबी सांस लेकर अपनी पत्नी से कहा कि अरे चिंता क्यूं करती हो अपने सिखाये हुए सभी नगर निगम में हैं बस हाथों हाथ काम हो जाएगा। वे सारे ठेकेदार, लेबर जिनके काम मैंने किए हैं, जल्द ही हमारा काम पूरा कर देंगे। देखो सोचने और काम होने में बहुत अंतर है, उनकी पत्नी बोली, मैं चाहती हूं कि आज ही आप निवेशक जी से बात करके नक्शा बनवा लिजिए और पास करवा लिजिए।

तुम्हारी जल्दबाजी करने की आदत अब भी गई नहीं, भगत राम बोले अब देखो न कल ही तो मैं ऑफिस गया था सबने कितना स्वागत किया, तुम्हें अब भी शंका है क्या, जल्दी ही हमरा काम हो जाएगा। लेन देन के बिना किसी का काम होता ही नहीं था। और जब पैसा आता था तो बंटता भी था भगत राम के बातों से उनकी पत्नी खुश हो गई । भगत राम ने सोचा कि एकदम ऊँचे स्तर पर जाने के बजाय नीचे स्तर से काम करवा लेना चाहिए। इसलिए उन्होंने नक्सा बनवाने का काम बाहर से करवाया और पास करवाने के लिए सीधे नक्सा विभा में काम करने वाले हरी शंकर के पास गए हरी शंकर ने पहले तो पैर छूकर उनका स्वागत किया लेकिन जब मालूम हुआ तो उनके गुरू अपना नक्सा पास करवाने आए हैं तब उसके व्यवहार में अंतर आ गया। एक निगाह उसने नक्सा पे डाली फिर उसे दराज में डालते हुए बोला ठिक है सर मैं इसे समय मिलते देख लूंगा। आप दो माह बाद आ जाना। भगत राम उसके मेज के पास खड़े रहे और पांच मिनट खड़े रहने के बाद वहां चले आए। उसने सोचा नक्सा तो पास हो ही जाएगा चलो अब बाकी लोगों को टटोला जाए। इसलिए टेंडर विभाग में गए और उन ठेकेदारों के नाम लिए जो काम कर रहे थे। वहां काम करने वाले रमेश ने कहा कि सर आजकल यहां यहां बहुत सख्ती हो गई है। इसलिए उनके नाम तो नहीं मिल पाएंगे। लेकिन ये जो ठेकेदार करीब मियां खड़े हैं आप उनसे बात कर लिजिए। रमेश ने करीम को आंख मारकर ईशारा कर दिया और करीब मिया ने भगत राम के काम को सुनकर दो इस्टेमेट बता दिया। आखिर थकहार कर भगत राम जी घर लौट आए और टेलीविजन देखने लगे। उनकी पत्नी ने जब काम के बारे में पूछा तो गिरे मन से बोले अरे ऐसे जल्दी भी क्या है सब हो जाएगा। अब भगत राम का मुख्य उद्धेश्य नक्सा पास करवाना था इसलिए दो महिने इंतजार करने के बाद फिर वह हरी शंकर के पास गए अबकी बार थोड़ा रूखेपन से हरी शंकर बोला कि सर काम बहुत था इसलिए आपका नक्सा मैं देख नहीं पाया अब ऐसा करना कि पंद्रह दिन बाद आ जाना। तब तक मैं कुछ न कुछ कर ही लूंगा। वैसे सर आप तो सब जानते ही है कि आप कुछ लेकर आजाना मैं काम कर दूंगा। भगत राम ने सोचा कि बच्चे हैं पहले भी अक्सर व इन्हें चाय समोसा खिला दिया करते थे इसलिए जब अगली बार आए तो पैकेट में गरम गरम समौसे लेकर आए और हरी शंकर के पास रख दिया। हरी शंकर ने बाकी लोगों को भी बुलाया और सबने समौसे खाए। इसके बाद हरी शंकर बोला कि सर मैंने फाइल तो बना ली है लेकिन नगर निरीक्षक शर्मा जी के पास अभी समय नहीं है वह

पहले आपके पुराने मकान का निरीक्षण करेंगे और जब रिपोर्ट देंगे तब मैं फाइल आगे बढ़ा दूंगा। ऐसा करिए आप एक माह बाद आ जाना। हारे थके भगतराम फिर घर आकर आराम करने लग गये। पत्नी के पूछने पर वह उखड़कर बोले कि देखो इनकी हिम्मत मेरे से ही सीखा है और मुझे ही सिखा रहे हैं। वह नक्सा विभाग का हरी शंकर जिसे मैंने उंगली पकड़कर चलाया था चार महीने से मुझे झुला रहा है। अरे जब विभाग में आया था तो उसके मुंह से मक्खी नहीं उड़ती थी और आज मेरे बदोलत वह लखपती हो गया और मुझे ही.....और भगत राम जी की पत्नी ने कहा कि देखो जी आजकल तो बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा रूपया और जो परम्पराएं आपने विभाग में डाली वह भी आगे बढ़ा रहे हैं। परम्परा की याद आते ही भगत राम चिन्तामुक्त हो गया। अगले दिन पांच हजार की एक गडडी लेकर वह हरी शंकर के पास गया और उसके दराज में चुपचाप रख दिया। हरी शंकर ने खुश होकर भगत राम की फाइल निकाली और चपरासी से कहा कि अरे सर के लिए चाय समौसे लेकर आओ। फिर भगतराम से बोला सर कल आपको पास किया हुआ नक्सा मिल जाएगा। भगत राम जी ने मुस्कराते हुए कहा धन्यवाद प्रभु और चाय समोसा खाकर मन ही मन सोचा अगर इतने पैसे पहले हरी शंकर को दे देता तो मेरा काम कब का हो जाता। आखिर मेरा सिखाया हुआ मुझको ही सीख दे गया।

एक बच्ची की विश्वास भरी कोशिश

शाहिद
स्टेशनरी इंचार्ज

टीना एक छोटी आठ साल की लड़की थी, एक दिन उसने अपने मम्मी पापा को उसके भाई सुमित के बारे में बाते करते हुए सुना। वह केवल इतना ही समझ पाई कि उसका भाई बहुत बीमार है और उनके पास ईलाज के लिए पैसे नहीं है। दूसरे वह एक किराए के मकान में चले गए। अब केवल एक मंहगा ऑपरेशन ही उनके भाई की जान बचा सकता है। उसने अपने पापा को कहते हुए सुना कि कोई भी उन्हें लोन नहीं दे रहा है। अब तो कोई ऐसा चमत्कार हो जाए जो उसे बचा सके। यह सुनकर मम्मी रोने लगी। टीना अपनी कमरे में गई और अल्मारी में से एक प्लास्टिक का जार, जिसमें पैसे रखे थे और उसमें से सारे सिक्के निकाल लिए और उन्हें गिनने लग गई। गिनने के बाद उसने सारे सिक्के जार में वापिस रख दिए और सो गई।

अगले दिन वह पास में स्थित एक बड़े मेडिकल स्टोर पर अपने पैसे लेकर पहुंच गई। काउंटर पर बैठा व्यक्ति मरीजों को दवाईयों देने में व्यस्त था। टिना ने एक सिक्का निकाला और कांच के काउंटर पर नॉक किया, वहां पर बैठा व्यक्ति ने चिढकर कहा कि तुम्हें क्या चाहिए टीना ने कहा मेरा भाई बहुत बीमार है और मैं उसके लिए मिरेकल खरीदना चाहती हूं। उस व्यक्ति ने कहा माफ कीजिए मैं आपका मतलब नहीं समझा। फिर टीना ने कहा मेरे भाई का नाम सुमित है उसे कोई बहुत बड़ी बीमारी हो गई है पापा कहते हैं कि अब कोई मिरेकल ही उसे बचा सकता है। फिर दवाई बेचने वाले ने कहा कि हम यहां मिरेकल नहीं बेचते हैं, मैं इसमें तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। फिर टीना कहती है कि सुनिए भाईसाहब मेरे पास पैसे हैं, अगर वह कम है तो मैं और भी पैसे ला सकती हूं। आप केवल यह बता दीजिए की कितने पैसे लगेंगे। इसी बीच यह सब बातें दवाई बेचने वाले के पास खड़ा एक व्यक्ति सुन रहा था जो कि शिकागो शहर से आया था, और तभी उसने टीना से पूछा तुम्हारे भाई को किस तरह की मिरेकल की जरूरत है। फिर टीना ने जवाब दिया कि मुझे ठीक–ठीक तो नहीं पता पर वह बहुत बीमार है और मम्मी कहती है कि उसे एक बड़े ऑपरेशन की जरूरत है लेकिन मेरे पापा के पास इतने पैसे नहीं है। उस व्यक्ति ने टीना से पूछा तुम्हारे पास कितने पैसे हैं टीना ने कहा एक हजार दो सौ हैं पर मैं और ला सकती हूं अगर आप कहें तो फिर वह व्यक्ति मुस्कराते हुए कहता है कि अरे वाह कितना बढ़िया इतेफाक है मिरेकल तो एक हजार दो सौ से ही आता है और उस व्यक्ति ने टीना से पैसे ले लिए औा कहा चलो मुझे अपना घर बताओ मैं तुम्हारे भाई और पापा मम्मी से मिलना चाहता हूं हो सकता है कि मेरे पास उनके लिए मिरेकल हो।

दरअसल वह भला व्यक्ति एक न्यूरो सर्जन था और उस व्यक्ति ने टीना के भाई का इलाज करके उसे एकदम ठीक कर दिया और कुछ भी पैसे नहीं लिए और टीना के मम्मी पापा इस अजीब घटनाक्रम के बारे में सोच कर हैरान थे जो उन्हें यहां ले आया था और यह वास्तव में उनके लिए चमत्कार ही था, वर्ना पता नहीं इस ऑपरेशन में कितने पैसे लग जाते। आज एक छोटी बच्ची की विश्वास भरी कोशिश से उसके भाई की जान बच गई।

शून्य की महिमा

उमेश सिह
ऑफिस बॉय

उस शून्य से तू आया
और शून्य में ही जाएगा
यहां न कोई रह पाया
और न तू ही रह पाएग।

ऊपर तेरे हार की
बिछी बिसात है
उस शून्य से तू जीत जाय
तेरी कहाँ औकात है

कर्म कर ले तू ऐसा
जो हो इंसानों के जैसा
जब जन्म है इंसान का
तो कर्म क्यों शैतान का।

सब कहते हैं आज
आया कलयुग का राज
मन में आया इक सवाल
कलयुग बनाया किसने जनाब।

हमारा कर्म जो आज है
वही कलयुग का राज है
तू बदल कर तो देख
तेरा बदलेगा आज है।

एक नास्तिक की भक्ति

रितेन सरकार
ऑफिस बॉय

हरिराम नामक आदमी शहर के एक छोटी सी गली में रहता था। वह एक मेडिकल दुकान का मालिक था। सारी दवाइयों की उसे अच्छी जानकारी थी, दस साल का अनुभव होने के कारण उसे अच्छी तरह पता था कि कौन सी दवाई कहाँ रखी है। वह इस पेशे को बड़े ही शौक से बहुत ही निष्ठा से करता था। दिन पर दिन उसके दुकान में सदैव भीड़ लगी रहती थी। वह ग्राहकों वांछित दवाइयों को सावधानी और इत्मीनान होकर देता था। पर उसे भगवान पर कोई भरोसा नहीं था वह एक नास्तिक था, भगवान के नाम से ही वह चिढ़ने लगता था। घरवाले उसे बहुत समझाते पर वह उनकी एक न सुनता था, खाली वक्त मिलने पर वह अपने दोस्तों के संग मिलकर घर या दुकान में ताश खेलता था।

एक दिन उसके दोस्त उसका हालचाल पूछने दुकान में आए और अचानक बहुत जोर से बारिश होने लगी,बारिश की वजह से दुकान में भी कोई नहीं था। बस फिर क्या, सब दोस्त मिलकर ताश खेलने लगे। तभी एक छोटा लड़का उसके दूकान में दवाई लेने पर्चा लेकर आया। उसका पूरा शरीर भीगा था। हरिराम ताश खेलने में इतना मशगूल था कि बारिश में आए हुए उस लड़के पर उसकी नजर नहीं पड़ी। ठंड़ से ठिठुरते हुए उस लड़के ने दवाई का पर्चा बढ़ाते हुए कहा- जी मुझे ये साहब" दवाइयाँ चाहिए, मेरी माँ बहुत बीमार है, उनको बचा लीजिएबाहर और सब . दुकानें बारिश की वजह से बंद है। आपके दुकान को देखकर मुझे विश्वास हो गया कि मेरी माँ बच जाएगी। यह दवाई उनके लिए बहुत जरूरी है। इस बीच लाइट भी चली गई और सब दोस्त जाने लगे। बारिश भी थोड़ा थम चुकी थी, उस लड़के की पुकार सुनकर ताश खेलतेखेलते ही - हरिराम ने दवाई के उस पर्चे को हाथ में लिया और दवाई लेने को उठा, ताश के खेल को पूरा न कर पाने के कारण अनमने से अपने अनुभव से अंधेरे में ही दवाई की उस शीशी को झट से निकाल कर उसने लड़के को दे दिया। उस लड़के ने दवाई का दाम पूछा और उचित दाम देकर बाकी के पैसे भी अपनी जेब में रख लिया। लड़का खुशीखुशी दवाई की शीशी लेकर चला गया। - वह आज दूकान को जल्दी बंद करने की सोच रहा था। थोड़ी देर बाद लाइट आ गई और वह यह देखकर दंग रह गया कि उसने दवाई की शीशी समझकर उस लड़के को दिया था, वह चूहे मारने वाली जहरीली दवा है, जिसे उसके किसी ग्राहक ने थोड़ी ही देर पहले लौटाया था, और ताश खेलने की धुन में उसने अन्य दवाइयों के बीच यह सोच कर रख दिया था कि ताश की बाजी के बाद फिर उसे अपनी जगह वापस रख देगा। अब उसका दिल जोरजोर से धड़कने लगा। उसकी - दस सालकी नेकी पर मानो जैसे ग्रहण लग गया। उस लड़के बारे में वह सोच कर तड़पने लगा। सोचा यदि यह दवाई उसने अपनी बीमार माँ को देगा, तो वह अवश्य मर जाएगी। लड़का भी बहुत छोटा होने के कारण उस दवाई को तो पढ़ना भी नहीं जानता होगा। एक पल वह अपनी

इस भूल को कोसने लगा और ताश खेलने की अपनी आदत को छोड़ने का निश्चय कर लिया पर यह बात तो बाद के बाद देखा जाएगी। अब क्या किया जाए? उस लड़के का पता ठिकाना भी तो वह नहीं जानता। कैसे उस बीमार माँ को बचाया जाए? सच कितना विश्वास था उस लड़के की आंखों में।

हरिराम को कुछ सूझ नहीं रहा था। घर जाने की उसकी इच्छा अब ठंडी पड़ गई। दुविधा और बेचैनी उसे घेरे हुए था। घबराहट में वह इधरउधर देखने लगा। पहली बार उसकी दृष्टि - दीवार के उस कोने में पड़ी, जहाँ उसके पिता ने जिद्द करके भगवान श्रीकृष्ण की तस्वीर दुकान के उदघाटन के वक्त लगाई थी, पिता से हुई बहस में एक दिन उन्होंने हरिराम से भगवान को कम से कम एक शक्ति के रूप को मानने और पूजने की मिन्नत की थी। उन्होंने कहा था कि भगवान की भक्ति में बड़ी शक्ति होती है, वह हर जगह व्याप्त है और हमें सदैव अच्छे कार्य करने की प्रेरणा देता है। हरिराम को यह सारी बात याद आने लगी। आज उसने इस अद्भुत शक्ति को आज़माना चाहा।

उसने कई बार अपने पिता को भगवान की तस्वीर के सामने कर जोड़कर, आंखें बंद करते हुए पूजते देखा था। उसने भी आज पहली बार कमरे के कोने में रखी उस धूल भरे कृष्ण की तस्वीर को देखा और आंखें बंद कर दोनों हाथों को जोड़कर वहीं खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद वह छोटा लड़का फिर दुकान में आया। हरिराम को पसीने छूटने लगे। वह बहुत अधीर हो उठा। पसीना पोंछते हुए उसने कहाक्या बात है बेटा तुम्हें क्या चाहिए -? लड़के की आंखों से पानी छलकने लगा। उसने रुकतेबाबूजी माँ को बचाने के लिए मैं दव...बाबूजी -रुकते कहा-ाई की शीशी लिए भागे जा रहा था, घर के करीब पहुँच भी गया था, बारिश की वजह से ऑंगन में पानी भरा था और मैं फिसल गया। दवाई की शीशी गिर कर टूट गई। क्या आप मुझे वही दवाई की दूसरी शीशी दे सकते हैं बाबूजी? लड़के ने उदास होकर पूछा। हाँक्यों नहीं ! हाँ !? हरिराम ने राहत की साँस लेते हुए कहा। लो, यह दवाईपर उस लड़के ने दवाई की शीशी लेते हुए कहा !, पर मेरे पास तो पैसे नहीं है, उस लड़के ने हिचकिचाते हुए बड़े भोलेपन से कहा। हरिराम को उस बिचारे पर दया आई। कोई बात नहींतुम यह दवाई ले जाओ और अपनी माँ को बचाओ। जाओ जल्दी - करो, और हाँ अब की बार ज़रा संभल के जाना। लड़का, अच्छा बाबूजी कहता हुआ खुशी से चल पड़ा। अब हरिराम की जान में जान आई। भगवान को धन्यवाद देता हुआ अपने हाथों से उस धूल भरे तस्वीर को लेकर अपनी धोती से पोंछने लगा और अपने सीने से लगा लिया।
अपने भीतर हुए इस परिवर्तन को वह पहले अपने घरवालों को सुनाना चाहता था।

जल्दी से दुकान बंद करके वह घर को रवाना हुआ। उसकी नास्तिकता की घोर अंधेरी रात भी अब बीत गई थी और अगले दिन की नई सुबह एक नए हरिराम की प्रतीक्षा कर रही थी।

मेरे हिस्से की देशभक्ति

लवली सूदन
ओ.ए. एण्ड केयर टेकर(परि.।।)

बीच सड़क पत्थर को सदा किनारे कर आता हूँ
सीमा पर खड़े सैनिकों की दीर्घ आयु की कामना करता हूं
पास पड़ोस के सुख दुख में प्रथम हाजिर हो जाता हूं
भूखा साथी हो अगर कोई खाना साथ मिलजुलकर खाता हूं
शाम को हर किसी से मिलकर खुशी से घर जाता हूं
कुछ ऐसे अपने हिस्से की देशभक्ति कर लेता हूं।।

चिड़ियों की खातिर जल रखकर दोने कुछ बिखराता हूं
सत्य कहूं तो कभी कभी मैं झूठी बात बनाता हूं
कभी खरीदूं गुब्बारे फिर बच्चों को दे आत हूं
कभी बेवजह अनुपयोगी वस्तुओं को भी सड़क से ले आता हूं
इसी तरह कुछ पेट सदा मैं चुपके से भर लेता हूं
कुछ ऐसे अपने हिस्से की देशभक्ति कर लेता हूं।।

भाषा की उन्नति की खातिर हिन्दी को अपनाता हूं
राह पूछते हर प्राणी को उसके घर पहुंचाता हूं
बेघर बच्चों से मिलकर ही सदा दिवाली मनाता हूं
निर्बल को देकर सहारा उसकी खुशी बन जाता हूं
मौका आए तो उनके दुख मैं अपने सर ले लेता हूं
कुछे ऐसे कर्म करके मैं हर चेहरे पर मुस्कान लाता हूं
कुछे ऐसे अपने हिस्से की देशभक्ति कर लेता हूं।।

अनिल कुमार
प्रेषक

प्लास्टिक पौलिथीन से छुटकारा

प्लास्टिक को हटायेंगे
देश को बचायेंगे,
सूचना जन–जन तक पहुंचायेंगे।

हम सबकी जिम्मेदारी है
प्लास्टिक जीवन पर भारी है
इसे हटाने की हमने ठानी है।

हर कदम पर प्लास्टिक को हटायेंगे
कपड़ा, थैला प्रयोग में लायेंगे,
जन–जन में ये बात फैलायेंगे।

ना ही प्लास्टिक जलती है,
ना ही प्लास्टिक गलती है,
बल्कि ये जन–जन को गलाती है।

अब हम सब कसम खायेंगे
आने वाली पीढ़ी को बचायेंगे
प्लास्टिक को हटायेंगे
देश को बचायेंगे।

हिन्दी तुम परेशान न हो

संतोष
ऑफिस बॉय

आए हिन्दी दिवस तो आए वही टोली
बचाओ खतरे मे है हिन्दी की बोली
लगता है लोगों को अंग्रेजी की
हुकूमत में हिन्दी दब जाएगी
अरे हिन्दी बोलने में हमें कब तक शर्म आएगी
जैसे बिमार हो हिन्दी और लगा हो फिकरमंदो
का जमावड़ा क्यों इसी तरह मनता है हिन्दी दिवस
हिन्दी पखवाड़ा मेरी नजर से देखो तो तेरी राह में
फैले हैं रोशन उजाले हिन्दी तु परेशान ना हो।

ऐ भाषा हिन्दुस्तानी तू 22 जुबानों को जोड़ता एक पुल है
तू दक्षिण से पश्चिम के बीच की रफ्तार है
रेल किसी दिशा में चले, संग चलती तू है
मैंने तुझे दूर अंडमान में भी सुना है
तुझे बोलने के लिए मैंने अंजानो से भी एक रिश्ता
बुना है, टूटी फूटी ही सही तू हर प्रांत में चल जाती है।
तू अखबार से विचार बन जाती है तू पहली लिखी शायरी है
तू रौनक –ए–डायरी है, तू रेडियो की कॉमेंटरी है तू देश की शान है।

तूम इंग्लिश की क्लास में चुपके से छुई हंसी ठिठोली है
तू नेताओं का जुमला है चुनाव की बोली है।
तेरी खूबसूरती यह है कि तू बे रोक टोक है
तुझे बोलने से पहले हिन्दुस्तानी सोचता नहीं है
तुझे खतरा है भी अगर तो है अपने ही मतवालों से सबवे को पैदल
पारपथ लिखने वालों से सरकारी फाइलों में गुटती है जो सालों
से कुछ एसे ही भाषा के स्वयंभू रखवालों से हिन्दी तू परेशान ना हो।

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
15 एनबीसीसी टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस
नई दिल्ली–110066